बीओआई

वार्ता

बैंक ऑफ़ इंडिया की तिमाही हिन्दी गृहपत्रिका

दिसंबर, 2024

बैंक ऑफ़ इंडिया

रिश्तों की जमापूँजी

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा 'बीओआई वार्ता' के पिछले अंक का विमोचन

राजभाषा संसदीय समिति द्वारा नई दिल्ली में बैंक के दिल्ली एनसीआर अंचल के निरीक्षण के दौरान 'बीओआई वार्ता' के सितंबर 2024 अंक का विमोचन समिति के माननीय उपाध्यक्ष एवं सदस्यों द्वारा किया गया।

राजभाषा पुरस्कार 2023-24

बैंक ऑफ़ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, एरणाकुलम को क्षेत्रीय (दक्षिण - पश्चिम) राजभाषा पुरस्कार 2023-24 के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। मैसूरु में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में माननीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय जी ने आंचलिक प्रबंधक श्री प्रदीप रंजन पाल को शील्ड प्रदान की एवं बिहार के महामहीम राज्यपाल श्री आरिफ़ मुहम्मद खान ने श्रीमती षीबा एस आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) को प्रमाणपत्र प्रदान किया।

मुख्य संरक्षक
श्री रजनीश कर्नाटक
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

संरक्षक
श्री राजीव मिश्रा
कार्यपालक निदेशक

मार्गदर्शक
श्री अभिजीत बोस
मुख्य महाप्रबंधक

प्रधान संपादक
श्री बिश्वजित मिश्र
महाप्रबंधक

उप प्रधान संपादक
सुश्री मऊ मैत्रा
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल
श्री अमरीश कुमार, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
श्री राजेश यादव, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
श्री सचिन यादव, प्रबंधक (राजभाषा)
श्री परवेश कुंडू, प्रबंधक (राजभाषा)
श्री दिव्यांश मिश्र, अधिकारी (राजभाषा)

यह आवश्यक नहीं कि पत्रिका में छपे लेखों में व्यक्त विचार बैंक के हों।

प्रधान संपादक,
बैंक ऑफ़ इंडिया, प्रधान कार्यालय,
राजभाषा विभाग, स्टार हाउस, जी-5, जी ब्लॉक,
बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पूर्व)
मुंबई - 400 051

विषय-सूची

अपने विभाग को जानिए : राजभाषा विभाग - एक स्वर्णिम यात्रा 07

उत्कृष्ट ग्राहक सेवा भाषा में निहित कारोबार विस्तार की आशा 09

आत्मनिर्भर भारत की दिशा में हिंदी का योगदान 12

तनावमुक्त रहने के लिए काम और निजी जीवन के मध्य संतुलन की आवश्यकता 14

प्रबंधक जी की दिनचर्या, 'बोहनी से डे-एंड तक' 16

हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं की बैंकिंग में उपयोगिता 18

लघु कथा - ज़िंदगी की कला 21

कहानी - स्वास्थ्य ही धन है 24

भारत की प्रगति में बाधक - धार्मिक उन्माद 26

हिंदी में बतियाती कृत्रिम मेधा: संवाद का भविष्य 28

हमारा बैंक 30

यात्रा-वृतांत - मेरी रणथंभौर की यात्रा 32

पुस्तक समीक्षा - व्यतिक्रम 35

धरोहर - आगरा का ताज महल 36

रोचक जानकारी - भारत का मिनी अफ्रीकी गांव 38

मांडू : एक पर्यटन स्थल 39

चित्र काव्य प्रतियोगिता 41

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय साथियो,

बीओआई वार्ता के इस नवीनतम अंक के माध्यम से आपसे संवाद करने में मुझे खुशी हो रही है। बैंक के वित्तीय वर्ष 25 की तीसरी तिमाही के परिणाम कई मायनों में अभूतपूर्व हैं। तीसरी तिमाही की समाप्ति पर बैंक का कुल वैश्विक कारोबार वर्ष दर वर्ष 13.62% की वृद्धि के साथ ₹14,46,295 करोड़ पर पहुंच गया है, जबकि वैश्विक जमाराशियाँ वर्ष दर वर्ष 12.29% की वृद्धि के साथ ₹7,94,788 करोड़ हो गई हैं और वैश्विक अग्रिम 15.30% की वृद्धि दर हासिल करते हुए ₹6,51,507 करोड़ पर पहुंच गए हैं। इस तिमाही में हमारा निवल लाभ ₹2,517 करोड़ रहा, जो हमारे द्वारा रिपोर्ट किया गया अब तक का सर्वाधिक निवल लाभ है। ये उपलब्धियाँ सभी स्टाफ सदस्यों के सामूहिक प्रयास और समर्पण का प्रमाण हैं।

अब हम वित्तीय वर्ष 25 की अंतिम तिमाही में हैं। हमें मौजूदा वित्तीय वर्ष के परिणामों को उत्कृष्ट बनाए रखने के लिए अपनी लाभप्रदता में निरंतर सुधार करना है तथा आस्ति गुणवत्ता बेहतर करते हुए आरएएम सेगमेंट, कासा और रिटेल सावधि जमा में सतत वृद्धि पर ध्यान केंद्रित करना है। कारोबार वृद्धि में तेजी लाने के साथ-साथ, हमें स्लिपेज को कम करते हुए, नकद वसूली तथा अपग्रेडेशन को बढ़ाकर एनपीए को कम करने पर ध्यान केंद्रित करना है। आइए, इस वर्ष हम उत्कृष्ट परिणाम देने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें।

कारोबार वृद्धि के साथ-साथ राजभाषा कार्यान्वयन में भी हमारा बैंक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में अग्रणी भूमिका निभाता रहा है। राजभाषा विभाग को बैंक में पाँच दशकों की स्वर्णिम यात्रा पूरी करने के लिए मैं बधाई देता हूँ। गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा हाल ही में घोषित किए गए, क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार प्राप्त करने के लिए भी मैं सभी पुरस्कृत कार्यालयों को बधाई देता हूँ। हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में ग्राहकों को सेवाएँ उपलब्ध करवाना हमारा कर्तव्य है। विशेषकर वित्तीय समावेशन योजनाओं के मामले में यह जरूरी है कि ग्राहकों को सरकार द्वारा दी जाने वाली अनुदान सहायताओं एवं अन्य लाभों की सही जानकारी दी जाए। हमारा बैंक उन्नत तकनीकों को ऑनबोर्ड करने की दिशा में तेजी से अग्रसर है। तकनीकी अपग्रेडेशन से नियामकीय दिशानिर्देशों के अनुपालन में सहायता मिलेगी तथा हमारे कार्यनिष्पादन और कारोबार में भी वृद्धि सुनिश्चित होगी।

इस वित्तीय वर्ष की शेष अवधि में सभी स्टाफ सदस्य बैंक के कारोबार वृद्धि हेतु अपना सर्वोत्तम प्रयास सुनिश्चित करें। मुझे विश्वास है कि सभी के साझा प्रयास से हम इस वर्ष बैंक के कारोबार विस्तार में नए कीर्तिमान स्थापित करने में सफल होंगे। आप सभी 'बीओआई वार्ता' के इस अंक में प्रकाशित सम सामयिक लेखों को पढ़ें और उनका लाभ उठाएँ।

इस वर्ष की पदोन्नति प्रक्रिया में शामिल सभी स्टाफ सदस्यों को सफलता की शुभेक्षा।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,

रजनीश

(रजनीश कर्नाटक)

कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय साथियो,

बैंक की हिन्दी गृहपत्रिका "बीओआई वार्ता" के 'दिसंबर 2024 अंक' के माध्यम से आपसे संवाद करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। हमने पिछली कुछ तिमाहियों में बैंक के कारोबार में अभूतपूर्व वृद्धि दर्ज़ की है। सभी स्टाफ सदस्यों के साझा प्रयासों से ही यह संभव हो पाया है। आजकल बैंकिंग सेवा संबंधी व्यवसाय अत्यधिक प्रतिस्पर्धी हो चुके हैं। पूरी बैंकिंग व्यवस्था ग्राहकों के विश्वास पर ही टिकी है। इसलिए बैंकिंग सेवा क्षेत्र में, स्वदेशी एवं स्थानीय भाषाओं की भूमिका अपरिहार्य है। हिन्दी, राजभाषा के साथ-साथ, देश में बोल-चाल की लोकप्रिय भाषा है एवं बैंकों में कामकाज की प्रमुख भाषा है। एक बैंक होने के नाते ग्राहकों को उत्कृष्ट बैंकिंग सेवा उपलब्ध करवाना ही हमारा मूल उद्देश्य है। ग्राहकों के भरोसे एवं उनकी संतुष्टि के लिए हमें उनकी भाषा में ही संवाद को प्राथमिकता देनी चाहिए।

हमारे बैंक में राजभाषा विभाग का गठन हुए पचास वर्ष हो चुके हैं। पचास वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर मैं राजभाषा विभाग को शुभकामनाएँ देता हूँ। पाँच दशकों की इस गौरवपूर्ण अवधि में बैंक को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए भारत सरकार, भारतीय रिज़र्व बैंक आदि से अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा इस वर्ष घोषित किए गए क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कारों में हमारे अनेक कार्यालयों को पुरस्कार मिले हैं। मैं पुरस्कार प्राप्त करने वाले सभी कार्यालयों को बधाई देता हूँ। हम अब वित्तीय वर्ष की अंतिम तिमाही में आ चुके हैं। यह तिमाही बैंक के कारोबार की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इस तिमाही का प्रदर्शन हमारे बैंक के वार्षिक परिणामों को प्रभावित करेगा। इसलिए मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि अपने डेस्क का कामकाज निपुणता से करते हुए बैंक की जमाराशियों व अग्रिमों में वृद्धि करवाएँ तथा एनपीए वसूली के लिए अतिरिक्त एवं यथासंभव प्रयास करें।

'बीओआई वार्ता' के इस नवीनतम अंक में विभिन्न विषय के लेखों का समावेशन किया गया है। मैं इस अंक में योगदान देने के लिए सभी स्टाफ सदस्यों के प्रयासों की सराहना करता हूँ। सभी स्टाफ सदस्यों से मौजूदा वित्तीय वर्ष की अंतिम तिमाही में सभी लक्ष्यों को प्राप्त करके उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन करने की भी उम्मीद करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,

(राजीव मिश्रा)

प्रधान संपादक की कलम से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिन्दी गृह पत्रिका "बीओआई वार्ता" के दिसंबर 2024 अंक को आपके सुपुर्द करना मेरे लिए हर्ष की बात है। इस वर्ष त्योहारों से सज्जित तीसरी तिमाही के दौरान हमारे बैंक ने कारोबार में तो उत्कृष्ट प्रदर्शन किया ही है साथ ही राजभाषा कार्यान्वयन में भी उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन करते हुए भारत सरकार से अनेक क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार एवं विभिन्न नराकासों से राजभाषा शील्ड आदि पुरस्कार प्राप्त किए हैं। इस वर्ष हमारे बैंक में 'राजभाषा विभाग' ने भी गठन के पश्चात 50 वर्षों की अवधि पूरी की है। 50 वर्षों की इस स्वर्णिम यात्रा में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में हमारे बैंक ने अनेक उपलब्धियां दर्ज़ कराई हैं। नराकास के सर्वोत्तम संयोजन से लेकर रिज़र्व बैंक से पुरस्कार प्राप्त करने एवं भारत सरकार से कई बार राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त करने तक बैंक ने निरंतर राजभाषा के कार्यान्वयन में उत्कृष्टता का प्रमाण दिया है तथा यह क्रम निरंतर जारी है।

इस अंक में स्टाफ सदस्यों ने भाषा सहित विभिन्न विषयों पर लेख लिखे हैं। आमुख लेख में सुश्री मऊ मैत्रा ने बैंक में राजभाषा विभाग के कामकाज एवं 50 वर्षों की स्वर्णिम यात्रा का जिक्र किया है, तो बृजेश कुमार के लेख में ग्राहक सेवा भाषा की विशेषताओं का उल्लेख है, वहीं दिव्यांश मिश्रा के लेख में हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं की बैंकिंग में उपयोगिता के बारे बताया गया है। इसी तरह इस अंक में यात्रा वृतांत, पुस्तक समीक्षा एवं धरोहर सरीखे स्थायी स्तंभो में पाठकों के लिए उपयोगी एवं पठनीय सामग्री का प्रकाशन किया गया है। आंवला, लक्ष्य, जैसे आज आदि कविताएं पत्रिका में साहित्यिक विविधता सुनिश्चित करते हुए जीवन के विभिन्न पहलुओं पर स्टाफ सदस्यों के नजरिए को रेखांकित करती हैं।

मैं इस अंक में प्रकाशित रचनाओं को प्रस्तुत करने वाले सभी स्टाफ सदस्यों की सराहना करता हूँ। लेखन में रुचि होना सबसे उम्दा शौक माना गया है। मेरा मानना है कि हमारी कोई न कोई रचनात्मक रुचि अवश्य होनी चाहिए, इससे दैनिक कामकाज में हमारी एकाग्रता एवं दक्षता में भी वृद्धि होती है। वित्तीय वर्ष की अंतिम तिमाही में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए, इस अंक पर आपकी प्रतिक्रियाओं हेतु प्रतीक्षारत...

भवदीय,

बिश्वजित मिश्र

(बिश्वजित मिश्र)
महाप्रबंधक

राजभाषा विभाग - एक स्वर्णिम यात्रा

मऊ मैत्रा
सहायक महाप्रबंधक (रा.भा.)
प्रधान कार्यालय

महाप्रबंधक की देखरेख में राजभाषा विभाग प्रधान कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी सभी कामकाजों के दायित्वों का निर्वहन करता है। राजभाषा विभाग का प्रमुख दायित्व बैंक के कामकाज में राजभाषा अधिनियम, 1963 की धाराओं, राजभाषा नियम, 1976 एवं राजभाषा संबंधी अन्य संवैधानिक प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित करना है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

बैंक में राजभाषा संबंधी संवैधानिक एवं कानूनी उपबंधों के अनुपालन को सुनिश्चित करने और संघ के सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु वर्ष 1974 में प्रधान कार्यालय में हिंदी कक्ष की स्थापना की गई थी। समय के साथ-साथ बैंक में संगठनात्मक परिवर्तन हुए तथा कार्यालयों और शाखाओं की वृद्धि के साथ राजभाषा अधिकारियों की संख्या में भी वृद्धि हुई है। राजभाषा कक्ष भी समय के साथ राजभाषा विभाग में परिवर्तित हो गया। मौजूदा वित्तीय वर्ष में राजभाषा विभाग ने बैंक में अपनी 50 वर्षों की यात्रा पूरी की है। प्रधान कार्यालय में हिंदी कक्ष की शुरुआत 3 अधिकारियों के साथ की गई थी एवं 8 अधिकारी उस समय क्षेत्रीय कार्यालयों में नियुक्त किए गए थे। मार्च, 1968 में ही बैंक ने हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को मान्यता दी थी। बैंकिंग संबंधित कुछ सरल प्रारूपों को हिंदी एवं चार अन्य भाषाओं में बनाने का निर्णय लिया गया था। वर्तमान में बैंक के सभी महत्वपूर्ण प्रारूप द्विभाषी एवं क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध हैं। राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अनुपालन में वर्ष 1969 से बैंक की वार्षिक रिपोर्ट और तुलन पत्र (बैलेन्स शीट) हिंदी और अँग्रेजी में प्रकाशित की जा रही है। बैंक में हिंदी टाइपिंग की शुरुआत वर्ष 1977 में एक मैनुअल टाइपराइटर से की गई थी। सर्वप्रथम बैंक को वर्ष 1981 में रिज़र्व बैंक ऑफ़ इंडिया द्वारा आयोजित गवर्नर राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ था। तदुपरांत पुरस्कार प्राप्त करने का यह सिलसिला जारी रखते हुए पिछले वर्ष (2023-24) राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा बैंक को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु राजभाषा कीर्ति पुरस्कार की प्राप्ति हुई। अक्तूबर, 1964 से बैंक ने अपने "हाउस जर्नल" की शुरुआत की तथा वर्ष 1980 से "दि टेलर" नाम से यह द्विभाषी रूप में प्रकाशित की जाने लगी। तदुपरांत इस पत्रिका का नाम "तारांगण" रखा गया। 60 वर्षों से गृह पत्रिका नियमित रूप से प्रकाशित की जा रही है। राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2011 में "संकल्पना" नाम से तिमाही हिंदी गृह पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया गया। वर्ष 2014 से इसे "मेघतारा" नाम से प्रकाशित किया गया। वर्तमान में यह पत्रिका राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय द्वारा "बीओआई वार्ता" नाम से नियमित रूप से प्रकाशित हो रही है। दिनांक 01.10.1977 को संसदीय राजभाषा समिति द्वारा बैंक के प्रधान कार्यालय का पहली बार निरीक्षण किया गया। संसदीय राजभाषा समिति द्वारा दिनांक 13.02.2024 को बैंक के प्रधान कार्यालय का नवीनतम निरीक्षण किया गया। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार बैंक में एक व्यवस्थित हिंदी पुस्तकालय की स्थापना की गई है। पुस्तकालय में बैंकिंग साहित्य सहित, देश-विदेश के तमाम विख्यात लेखकों की पुस्तकें सभी स्टाफ सदस्यों के लिए उपलब्ध हैं। नियमित रूप से स्टाफ सदस्यों से परामर्श लेते हुए नई पुस्तकों को शामिल किया जा रहा है। हिंदी पुस्तकालय ने अब ई-पुस्तकालय की ओर अपना कदम बढ़ाया है। राजभाषा विभाग के प्रमुख दायित्व निम्नलिखित हैं:

राजभाषा नीति-नियमों का अनुपालन एवं राजभाषा कार्यान्वयन:

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार बैंक में विभाग द्वारा सभी कार्यकलापों में राजभाषा कार्यान्वयन सुनिश्चित करने हेतु स्टाफ सदस्यों को सहयोग प्रदान किया जाता है। प्रधान कार्यालय

के सभी विभागों एवं सभी अंचलों से हिन्दी की तिमाही प्रगति रिपोर्ट प्राप्त करके उसका समेकन कर उसे गृह मंत्रालय को प्रस्तुत किया जाता है। सभी विभागों एवं अंचलों की तिमाही प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा करके उन्हें अपेक्षित कार्रवाई के संबंध में अवगत करवाया जाता है। सभी विभागों एवं अंचलों में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन सुनिश्चित करवाते हुए उनके कार्यवृत्त की समीक्षा करके अपेक्षित कार्रवाई के बारे में अवगत करवाया जाता है। प्रधान कार्यालय में एमडी एवं सीईओ महोदय की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया जाता है। सभी अंचलों में तिमाही आधार पर हिन्दी कार्यशालाओं एवं शाखा निरीक्षणों के लक्ष्य की निगरानी करना एवं उक्त लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपेक्षित सहयोग सुलभ करवाना एवं तत्संबंधी फॉलो-अप करना भी विभाग का महत्वपूर्ण कार्य है।

अनुवाद कार्य

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत 14 दस्तावेज़ों को हिन्दी एवं अंग्रेजी द्विभाषी रूप में जारी किया जाना अनिवार्य है। प्रधान कार्यालय में सभी परिपत्रों, परिपत्रकों, सामान्य फॉर्म, फॉर्मेट, कोड, मैनुअल, प्रैस विज्ञप्तियों, वार्षिक रिपोर्ट आदि दस्तावेज़ों का अनुवाद कार्य राजभाषा विभाग द्वारा नियमित रूप से तथा समयानुसार किया जाता है। इसके अतिरिक्त सभी स्टाफ सदस्यों को हिन्दी में कामकाज हेतु प्रेरित एवं प्रोसाहित किया जाता है और अपेक्षित सहयोग उपलब्ध करवाया जाता है।

हिन्दी माह, हिन्दी दिवस एवं विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन

भारत सरकार के निर्देशानुसार प्रधान कार्यालय एवं सभी आंचलिक कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन में प्रगति हेतु हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित हिन्दी माह के दौरान प्रतियोगिताओं एवं विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। प्रति वर्ष विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर प्रधान कार्यालय द्वारा अखिल भारतीय अंतर बैंक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है।

प्रशिक्षण और हिन्दी ज्ञान का रोस्टर

बैंक में सभी स्टाफ सदस्यों का हिन्दी ज्ञान का रोस्टर तैयार एवं अद्यतन किया जाता है तथा उन्हें कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त, प्रवीणता प्राप्त एवं प्रशिक्षण के लिए शेष की श्रेणी में वर्गीकृत किया जाता है। प्रशिक्षण के लिए शेष स्टाफ सदस्यों को प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ के लिए नामित किया जाता है एवं कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त स्टाफ सदस्यों को प्रवीणता प्राप्त बनाने के लिए पारंगत पाठ्यक्रम में नामित किया जाता है। फिलहाल प्रधान कार्यालय में केंद्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान के तत्वावधान में पारंगत की कक्षाएँ आयोजित की जा रही हैं। इसके अतिरिक्त स्टाफ सदस्यों को हिंदी कार्यशालाओं और डेस्क प्रशिक्षण के माध्यम से भी नियमित रूप से प्रशिक्षित किया जाता है। सभी कम्प्युटरों में हिन्दी यूनिकोड सॉफ्टवेयर अपलोड करने एवं यूनिकोड में हिन्दी टाइपिंग सिखाने के लिए भी सहयोग प्रदान किया जाता है।

पत्रिकाओं का प्रकाशन

हमारे बैंक की दो गृह पत्रिकाओं यथा 'तारांगण' एवं हिन्दी गृह पत्रिका 'बीओआई वार्ता' के प्रकाशन हेतु आवश्यक कार्रवाई विभाग द्वारा की जाती है। इन पत्रिकाओं के संपादन एवं साहित्य सामग्री के संकलन का कार्य विभाग द्वारा किया जाता है। पत्रिकाओं में लिखने वाले स्टाफ सदस्यों को प्रोत्साहन स्वरूप मानदेय भी दिया जाता है।

प्रोत्साहन एवं पुरस्कार योजनाएँ

बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन में प्रगति सुनिश्चित करने के लिए प्रोत्साहन एवं पुरस्कार योजनाएं विभाग द्वारा कार्यान्वित की जाती हैं। अंचलों एवं प्रधान कार्यालय के विभागों के लिए वार्षिक आधार पर राजभाषा शील्ड योजना लागू है। प्रधान कार्यालय के विभागों में हिन्दी पत्राचार को बढ़ावा देने के लिए 'हिन्दी ईमेल प्रतियोगिता' का आयोजन तिमाही आधार पर किया जाता है। 'बीओआई वार्ता' में चित्र काव्य प्रतियोगिता एवं पत्रिकाओं में लिखने वाले स्टाफ सदस्यों को मानदेय दिया जाता है। हिन्दी माह, हिन्दी दिवस एवं विश्व हिन्दी दिवस पर अनेक प्रतियोगिताओं के माध्यम से स्टाफ सदस्यों को पुरस्कृत किया जाता है।

उपरोक्त सभी नियमित कार्यकलापों के साथ-साथ अन्य अनेक कार्यों में विभाग अपेक्षानुसार भागीदारी सुनिश्चित करता है। 50 वर्षों की स्वर्णिम यात्रा पूरी करते हुए राजभाषा विभाग ने बैंक को अखिल भारतीय स्तर पर अनेक पुरस्कारों से सुसज्जित एवं सम्मानित करवाया है। राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में बैंक को अनेक बार भारत का प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार, भारतीय रिज़र्व बैंक से पुरस्कार और अन्य प्रतिष्ठित संस्थाओं से पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। हमारे स्टाफ सदस्य अनेक संस्थाओं द्वारा आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं में भारी संख्या में नियमित रूप से पुरस्कार प्राप्त करते हैं। राजभाषा विभाग, अंचल में तैनात राजभाषा अधिकारियों के साथ मिलकर बैंक की छवि को बेहतर बनाने में सदैव प्रयासरत है।

उत्कृष्ट ग्राहक सेवा भाषा में निहित कारोबार विस्तार की आशा

बृजेश कुमार विश्वकर्मा
निरीक्षण एवं लेखा परीक्षण विभाग
वाराणसी आंचलिक कार्यालय

"आज के डिजिटल युग में, 'ग्राहक सेवा' केवल समस्याओं का समाधान करना मात्र नही है, अपितु ग्राहकों के साथ भावनात्मक जुड़ाव बनाते हुए, उन्हें विशिष्ट महसूस करवाते हुए कारोबार करने का तरीका बन चुकी है। प्रतिस्पर्धा के इस दौर में, जो कंपनियाँ ग्राहकों के मनोवैज्ञानिक और मानवीय पहलुओं को समझती हैं और उनके अनूरूप अपने उत्पादों एवं उत्पाद के इर्द-गिर्द दी जाने वाली सेवाओं को संरेखित करती हैं, वे ही ग्राहक से दीर्घकालिक विश्वास और निष्ठा अर्जित कर पाती हैं।"

जब कोई संगठन अपने ग्राहकों को उत्पाद या सेवाएँ खरीदने या उपयोग करने के दौरान, पहले या बाद में कोई भी सहायता एवं सहयोग उपलब्ध करवाता है, तो वह ग्राहक सेवा के अंतर्गत होता है। ग्राहक सेवा में उत्पाद संबंधी सुझाव देना, समस्याओं और शिकायतों का निवारण करना या सामान्यत: पूछे जाने वाले प्रश्नों का उत्तर देने जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं। अपने उत्पादों या सेवाओं के बारे में ग्राहक सेवा एक महत्वपूर्ण कारक है, जो क्रेता की संतुष्टि सुनिश्चित करने, ग्राहकों को जोड़कर रखने और कारोबार को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ग्राहक सेवा में स्थानीय भाषा का इस्तेमाल, ग्राहकों के साथ बातचीत करने और ब्रांड की इमेज बनाने में महत्वपूर्ण है। बातचीत का लहज़ा, शब्दों का चयन और शैली, ग्राहक की संतुष्टि और अनुभव को प्रभावित करते हैं। प्रभावी ग्राहक सेवा भाषा, व्यवसाय और ग्राहकों के बीच तालमेल, विश्वास और समझ सुनिश्चित करती है। ग्राहक सेवा भाषा में शारीरिक भाषा अर्थात् भाव-भंगिमाओं का इस्तेमाल, ग्राहक से बातचीत को गहन बनाता है, जिससे ग्राहकों को लगता है कि उन्हें समझा जा रहा है, उनके सुझावों को सराहा जा रहा है, और संस्था उनकी परवाह करती है।

ग्राहक सेवा भाषा से तात्पर्य है कि व्यवसाय अपने ग्राहकों के साथ कैसे संवाद करते हैं। इसमें कई तरह के कारक शामिल होते हैं, जैसे शब्दों का चयन, आवाज़ का लहज़ा और विभिन्न चैनलों पर समग्र संचार एवं प्रचार शैली। प्रभावी ग्राहक सेवा भाषा में स्पष्टता, सहानुभूति, सकारात्मकता और वैयक्तिकरण सहित कई प्रमुख घटक शामिल होते हैं। ये तत्व ग्राहक का विश्वास जीतने और अच्छे संबंध बनाने में महत्वपूर्ण होते हैं। ग्राहक सेवा भाषा ग्राहकों के ब्रांड को समझने और उससे बातचीत करने के तरीके को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लहज़ा, शैली और शब्दों का चयन उनके अनुभव और संतुष्टि को बहुत प्रभावित कर सकता है। प्रभावी ग्राहक सेवा भाषा व्यवसायों और उनके ग्राहकों के बीच एक पुल का काम करती है, जिससे विश्वास, तालमेल और समझ का निर्माण होता है। आज के प्रतिस्पर्धी परिदृश्य में, ग्राहक सेवा में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा एक ऐसा विशिष्ट कारक हो सकती है जो किसी ब्रांड को बाकी से अलग करती है।

चूँकि ग्राहक की बातचीत अक्सर ग्राहकों की समस्याओं या कुंठाओं से होती है, इसलिए सहानुभूतिपूर्ण और समाधान-उन्मुख ग्राहक सेवा भाषा का लाभ उठाना विभेदन के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। जैसा कि जेंडेस्क की सीएक्स ट्रेंड्स रिपोर्ट द्वारा उजागर किया गया है, बार-बार नकारात्मक अनुभव 75 प्रतिशत उपभोक्ताओं को प्रतिस्पर्धियों के पास जाने के लिए प्रेरित करते हैं। सहानुभूतिपूर्ण और आकर्षक भाषा का उपयोग करने वाले

व्यवसाय अपने लाभ को उल्लेखनीय रूप से प्रभावित कर सकते हैं। ग्राहकों की अपेक्षाओं और जरूरतों को पूरा करने के लिए भाषा को अनुकूलित करना उनके अनुभव को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाता है और ग्राहकों के बीच अपनेपन की भावना को बढ़ावा देता है।

व्यावसायिक हिन्दी में व्यवसाय, वाणिज्यिक लेखन, प्रस्तुतिकरण और संवाद के क्षेत्र में व्यवहारिक शब्दों का इस्तेमाल होता है। बहुभाषिकता व्यक्ति को स्मार्ट और कुशल बनाती है, व्यापार में बहुभाषिकता से ग्राहकों के साथ बेहतर बातचीत होती है और सफल व्यापारिक संबंध बनते हैं।

उपयोगकर्ताओं के साथ बातचीत करते समय, स्टाफ को ग्राहक की भावनाओं और स्थिति को स्वीकार करना चाहिए। सहानुभूतिपूर्ण भाषा का उपयोग करने से यह प्रदर्शित करने में मदद मिलती है कि स्टाफ ग्राहक के दृष्टिकोण को समझता है और सहायता प्रदान करने के लिए तैयार है। उदाहरण के लिए, "मुझे दिख रहा है कि आप परेशान हैं" को सीधा कहने के बजाय, हम यह कहकर सहानुभूति व्यक्त कर सकते हैं कि- आपको हुई असुविधा के लिए हमें खेद है, हम आपकी यथासंभव सहायता करने को तत्पर हैं। हालाँकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि ग्राहक सेवा में एक मैत्रीपूर्ण और सहज लहजा वांछनीय है, लेकिन ग्राहक के अनुरोध को अस्वीकार करते समय इसे असभ्य माना जा सकता है। इस जोखिम का मतलब यह नहीं है कि स्टाफ को ग्राहक की भावनाओं को संबोधित करने से बचना चाहिए, बल्कि यह कि इस्तेमाल की जाने वाली भाषा स्वाभाविक और मानवीय लगनी चाहिए।

ग्राहक सेवा प्रदान करते समय, भाषा को वैयक्तिकृत करना और प्रत्येक ग्राहक की चिंताओं और आवश्यकताओं के अनुसार प्रतिक्रियाएँ देना आवश्यक है। ग्राहक को नाम से संबोधित करना और अपेक्षानुसार पिछली बातचीत का उल्लेख करना, यह दर्शाने में मददगार होगा है कि हम ग्राहक पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दे रहे हैं। इसके अतिरिक्त, समस्या और समाधान को समझाने के लिए वर्णनात्मक भाषा का उपयोग करने से, इस संदेह को कम करने में मदद मिल सकती है कि कंपनी कुछ छिपा रही है। उदाहरण के लिए, "हमने आपके खाते के क्रेडेंशियल ठीक कर दिए हैं, समस्या हल हो जानी चाहिए" कहने के बजाय, अधिक विशिष्ट और विस्तृत स्पष्टीकरण हो सकता है "समस्या यह थी कि खाते का पासवर्ड एक्सपायर हो गया था। कंपनी ने अपने सिस्टम में क्रेडेंशियल रीसेट कर दिए, ताकि ग्राहक उसी पासवर्ड का उपयोग करके लॉग इन कर सके।" यह दृष्टिकोण ग्राहक को आश्वस्त करता है कि उनकी समस्या का समाधान कैसे किया गया।

हमें ग्राहक सेवा में सकारात्मक भाषा के महत्व पर भी विचार करना चाहिए। ग्राहकों को जवाब देते समय, इस बात पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि क्या किया जा सकता है, न कि क्या नहीं। "हम कल तक आपका चेक क्लियर नहीं कर सकते" कहने के बजाय, एक सकारात्मक प्रतिक्रिया दें जैसे कि, "हम परसों तक आपका चेक क्लियर कर देंगे" लगातार सकारात्मक भाषा का उपयोग करने से ग्राहक का जुड़ाव और संतुष्टि में सुधार होता है। सेवा वितरण में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए ग्राहक सेवा स्टाफ को सकारात्मक भाषा का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। किसी कठिन परिस्थिति में ग्राहक को उनके धैर्य के लिए धन्यवाद देने से उन्हें यह आश्वस्त करने में मदद मिल सकती है कि स्थिति सामान्य नहीं है और कंपनी उनके कारोबार को महत्व देती है। यदि कोई छोटी भूल/गलती या देरी हो जाती है, तो माफ़ी मांगने की बजाय ग्राहक को उनके धैर्य के लिए धन्यवाद देना सकारात्मक ग्राहक अनुभव बनाए रखने में मददगार होता है। यह दृष्टिकोण तब फायदेमंद होता है जब ग्राहक और कंपनी के बीच पहले से ही टकराव हो तथा स्टाफ को खुद को ग्राहक के दृष्टिकोण के साथ संरेखित करने की आवश्यकता हो।

ग्राहकों के साथ संपर्क करते समय स्पष्ट, संक्षिप्त और आसानी से समझ में आने वाली भाषा चुनें। तकनीकी शब्दावली या जटिल शब्दों से बचें, क्योंकि उससे ग्राहकों भ्रमित हो सकते हैं। संदेश को अधिक समझने योग्य बनाने के लिए उसे सरल बनाएँ और किसी भी अस्पष्टता को दूर करें।

बुरी खबर देते समय, मुद्दे को बढ़ा-चढ़ाकर बताने की बजाए, ईमानदारी से सीधा स्पष्ट बताएं। अनावश्यक घबराहट या परेशानी पैदा करने से बचते हुए सरल स्पष्टीकरण दिया जाना चाहिए। ग्राहक

को यह बताना भी आवश्यक है कि आगे क्या होने वाला है और चरणबद्ध ढंग से मार्गदर्शन या विकल्प प्रदान करें, जिसे वे आसानी से चुन सकते हैं।

ग्राहक के साथ विश्वास बनाने के लिए योग्यता और आत्मविश्वास दिखाते हुए एक पेशेवर लेकिन मैत्रीपूर्ण लहज़ा बनाए रखना आवश्यक है। आप एक हंसमुख रवैया अपना सकते हैं, लेकिन भाषा पेशेवर और विश्वसनीय होनी चाहिए। ग्राहकों को विश्वास होना चाहिए कि उनकी समस्याओं का यथाशीघ्र और प्रभावी ढंग से समाधान किया जाएगा। कुछ मामलों में, मार्केटिंग, बिक्री या ग्राहक सेवा के साथ पिछले अनुभवों के कारण ग्राहक और कंपनी के बीच अधिक विश्वास की आवश्यकता हो सकती है। ग्राहक को धीरे-धीरे ऐसे विकल्प सुझाए जाने चाहिए जो उन्हें समाधान की ओर ले जाएं, जिससे उन्हें लगे कि उनकी बात सुनी और समझी गई है। इन ग्राहकों को मजबूर करने या मनाने की कोशिश करने से बचना महत्वपूर्ण है।

प्रभावी संचार के लिए सांस्कृतिक भिन्नता के अनुसार ग्राहक सेवा भाषा को ढालना भी जरूरी है। इसमें भाषाई बारीकियों और अलग-अलग सांस्कृतिक मानदंडों एवं अपेक्षाओं पर विचार किया जाना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में काम करने वाले व्यवसाय स्थानीयकृत ग्राहक सेवा दिशानिर्देश विकसित करते हैं। इन बारीकियों को सफलतापूर्वक नेविगेट करने के लिए सांस्कृतिक क्षमता और संवेदनशीलता पर ग्राहक सेवा टीमों और प्रौद्योगिकियों को प्रशिक्षित करना आवश्यक है। किसी वस्तु या सेवा की उपयोगिता को ग्राहक के सामने रखने की कला सही ना हो तो हम उसकी महत्ता ग्राहक को नहीं समझा पाते हैं। इससे संवादहीनता उत्पन्न होती है और अर्थ का अनर्थ हो जाता है। कुशल संवाद के ऊपर एक कहावत भी है जो बहुत ही प्रचलित है, "बाते हाथी पायिंय, बाते हाथी पाँव" अर्थात् व्यक्ति अपनी बातों से अथवा कुशल संवाद से हाथी भी खरीद सकता है अन्यथा संवादहीनता के कारण उसी हाथी के पाँव के नीचे भी आ सकता है।

लक्ष्य

लक्ष्य तुम्हारा पंथ तुम्हारा, प्रगति पूर्ण यह कदम तुम्हारे,
किस पर दोष रखोगे बोलो चलने में यदि तुम ही हारे।

कुम्हारों की द्रणता से ही मिट्टी भी आकार पाती,
बिना थपेड़ो के तो मिट्टी भी धूल बनकर उड़ जाती।

तूफ़ानों से ही नैया खेकर के सच्चे नाविक हैं सुख पाते,
उलझन के सागर में ही तो सुलझन के मोती मिल पाते।

बुलंद हौसलों की चट्टानों के आगे क्या नदियां और नाले,
किस्मत दुल्हन पास खड़ी है कर्मठता का घूँघट डाले।

तुम्हें अंधेरा क्या घेरेगा तुममे है यौवन की बाती,
कर ले साहस और निकल पड़ शेरों की भांति।

कठिन चुनौती से डरकर, श्रम छोड़कर अगर भागे प्यारे,
तो .... तो फिर किस पर दोष रखोगे बोलो चलने में यदि तुम ही हारे।

अपूर्व मिश्रा
विधि विभाग
कानपुर अंचल

आत्मनिर्भर भारत की दिशा में हिंदी का योगदान

अमरीश कुमार
मुख्य प्रबंधक
राजभाषा विभाग
प्रधान कार्यालय

हिंदी न सिर्फ स्वावलंबन एवं स्वाभिमान का मस्तक है बल्कि यह आत्मनिर्भरता का सशक्त आधार भी है। हिंदी दिवस मनाते हुए हमें हिंदी की ताकत को समझना होगा और यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीजी के सशक्त भारत-आत्मनिर्भर भारत के आह्वान में हिंदी की प्रासंगिकता एवं इसकी महती भूमिका के सच को स्वीकारना होगा.....

भारत सांस्कृतिक विविधिताओं से भरा हुआ देश है। साथ ही भारत बहुभाषी देश है, यहाँ कई तरह की भाषाएं/बोलियाँ होने के कारण भी भारत की एक अलग पहचान है, भारत विविधता में एकता के नाम से भी जाना जाता है। चूँकि प्रत्येक भाषा की जननी संस्कृत भाषा को माना जाता है जो सभी भाषाओं में देखने को मिल जाती है, अर्थात भाषा बहुत ही महत्वपूर्ण पहलु है, जो संचार का माध्यम है, किसी भी व्यवसाय अथवा संवाद में भाषा अहम भूमिका होती है। प्राचीन काल से ही भारत आत्मनिर्भर देश रहा है परंतु आजादी के बाद देश में जो परिस्थितियाँ बनी वे सभी को सर्वविदित हैं, उन्हीं के चलते हमारे देश को बहुत सी वस्तुओं के लिए दूसरे देशों पर या विदेशी कंपनियों पर निर्भर रहना पड़ता है। संपूर्ण विश्व कोरोना महामारी के संकट से गुजरा है, कोरोना के इस महासंकट से उबरने और देश की स्थिति को बेहतर करने के लिए भारत ने स्वयं को आत्मनिर्भर बनाने का संकल्प लिया है। भारत बहुतायत में वस्तुओं का आयात विदेशों से करता था, परंतु इस महामारी के चलते संपूर्ण विश्व के आयात-निर्यात पर भारी असर पड़ा है। कहा जाता है कि आवश्यकता अविष्कार की जननी है..... वर्तमान हालातों को ध्यान में रखते हुए एवं इस स्थिति को सामान्य करने एवं देश की सभी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनना बहुत ही आवश्यक है।

आत्मनिर्भर भारत से तात्पर्य

आत्मनिर्भर भारत से तात्पर्य है कि जो किसी ओर पर निर्भर न हो, स्वयं में ही इतने साधन और संसाधन मौजूद हों कि किसी भी कार्य के लिए किसी और का मुँह ताकना न पड़े। अर्थात आत्म निर्भर भारत वो अवधारणा है जो भारत को उसके स्वावलंबी रूप में परिभाषित करती है। अर्थात आत्मनिर्भर का तात्पर्य होता है कि किसी वस्तु अथवा कार्य हेतु स्वंय पर निर्भर रहना। सामान्य जीवन में भी व्यक्ति को विकसित या पूर्ण तभी माना जाता है, जब वह काफी हद तक स्वयं पर आश्रित हो जाता है।

अत: उसे अपनी किसी भी आवश्यकता की पूर्ति हेतु किसी और पर निर्भर नहीं रहना पड़ता है। ऐसी स्थिति में उसे जिम्मेदार और काबिल माना जाता है। बात व्यक्ति की हो या देश की हो, कोई भी समाज सही मायने में तभी विकसित हो सकता है जब वह पूर्णत: स्वयं सिद्ध हो। अभी हाल ही में जब कोरोना महामारी के कारण किसी भी देश से सामानों का आदान-प्रदान बंद था तो लॉक़डाउन के दौरान हमारे प्रधान मंत्री ने देश को आत्म निर्भर बनाने का आह्वान किया। उन्होंने "वोकल फॉर लोकल" का नारा भी दिया, इसका अर्थ है कि लोकल में बनी वस्तुओं का उपयोग करना एवं उनका भरपूर मात्रा में प्रचार-प्रसार करना। जब हम सब भारतवासी अपने यहाँ की चीजों का उपयोग करेंगे और उनका प्रचार करेंगे तो भारत का पैसा भारत में ही रहेगा, जिससे विकास की संभावनाएँ और बढ़ेंगी। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य है कि भारत के संसाधनों से बनी वस्तुओं को भारत में ही उपयोग में लाना है।

भारत एवं वैश्विक बाजार में हिंदी का स्थान

हिंदी वैश्विक पटल पर फलती-फूलती भाषाओं का जीवंत उदाहरण है। हिंदी भाषा विश्व में मंदारिन 'चीनी भाषा' के बाद सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। भारत और विदेशों में करीब

50 करोड़ लोग हिंदी बोलते हैं तथा इस भाषा को समझने वाले लोगों की संख्या करीब 90 करोड़ है। बाजार के कारण भी हिंदी का प्रचार-प्रसार व्यापक हो रहा है। आज के वैश्विक फलक पर हिंदी स्वयं को एक संपर्क भाषा, प्रचार भाषा और राजभाषा के साथ-साथ वैश्विक भाषा के रूप में स्वयं को स्थापित करती जा रही है। हिन्दी को उसका गौरवपूर्ण स्थान दिलाने के लिये नरेन्द्र मोदी एवं पूर्व प्रधानमंत्री अटल विहारी वाजपेयी के प्रयत्नों को राष्ट्र सदा स्मरणीय रखेगा। क्योंकि प्रधानमंत्री मोदी ने सितंबर 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में भाषण देकर न केवल हिन्दी को गौरवान्वित किया बल्कि देश के हर नागरिक का सीना चौड़ा किया।

आत्मनिर्भर भारत होने के लाभ-

- उद्योगों की संख्या में अपेक्षित वृद्धि होगी।
- हमारे देश की अन्य देशों पर निर्भरता कम होगी।
- देश में रोजगार के नए अवसर सृजित होंगें।
- देश में बेरोजगारी के साथ-साथ गरीबी से मुक्ति में सहायता मिलेगी।
- आर्थिक स्थिति सुदृढ़ और मजबूत होगी।
- हम आयात कम और निर्यात ज्यादा कर सकेंगे।
- देश में स्वदेशी वस्तुओं का निर्माण कर देश की तरक्की को शीर्ष तक ले जाने में सहायता मिलेगी।

निश्चित रूप से हम सहजता से मिल जाने वाले प्राकृतिक संसाधनों और कच्चे मालों के द्वारा वस्तुओं का निर्माण करके अपने आस पास के बाजारों में इसे बेच सकते हैं। इससे आप स्वंय के साथ-साथ आत्म निर्भर भारत की राह में अपना योगदान दे सकते हैं और हम सब मिलकर एक आत्मनिर्भर राष्ट्र निर्माण के सपने को मजबूत बनाने में सहयोग कर सकते हैं।

आत्मनिर्भर भारत की दिशा में हिंदी का योगदान

भारत एक लोकतांत्रिक देश है। भारत के लोग जीविकोपार्जन के लिए एक कोने से दूसरे कोने तक जाते हैं अर्थात व्यवसाय करते हैं और वे आसानी से अपना व्यवसाय अथवा कार्य कर पाते हैं, साथ ही भारत का एक वर्ग जो मेहनत मजदूरी करने अपने गांव से बाहर जाता है, जो ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं है वह भी आसानी से अपनी जीविका चला पाता है अर्थात भाषा की दृष्टि से कहें तो उन्हें भाषा संबंधी संवाद में कोई कठिनाई अथवा परेशानी नहीं होती क्योंकि भारत में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा हिंदी है और सबसे ज्यादा समझी जाने वाली भाषा हिंदी है। भारत में हिंदी की उपयोगिता को किसी भी कीमत पर नकारा नहीं जा सकता हिंदी का हर भारतीय के जीवन में अत्यंत महत्व है, हिंदी हर भारतीय के उज्जवल भविष्य का आधार है प्राचीन काल से आज तक हिंदी ने देश को एक सूत्र में बांधा है और यह एकता का प्रतीक है। हिंदी संपूर्ण भारत को समृद्ध एवं आत्मनिर्भर बनाने में भूमिका निभा सकती है और वर्तमान में निभा भी रही है। क्योंकि देश की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी ही है। हिंदी देश की संपर्क भाषा, बोलचाल की भाषा तथा व्यापार की भाषा है, जो आत्मनिर्भर भारत में भाषा की दृष्टि से काफी मदद कर रही हैं हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता के कारण कई कंपनियों में हिंदी साइट भी शुरू हुई हैं, सभी मिलकर हिंदी के उत्थान का कार्य कर रही हैं इसके साथ ही भारत के निर्माण हेतु भारत सरकार द्वारा निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं जैसे-जैसे आत्मनिर्भरता बढ़ती जाएगी हमारे उद्योगों को भी बढ़ावा मिलेगा और इससे रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे, साथ ही हिंदी भाषा का विकास भी और तेज गति से बढ़ता जाएगा।

हमारी हिंदी एक समृद्ध भाषा है लेकिन हम ही इतने संकीर्ण हो गए हैं कि अंग्रेजी को बोलना सम्मान की बात समझने लगे हैं आज हम भारतवासियों को हिंदी दिवस मनाने की आवश्यकता क्यों पड़ रही है भारत एक हिंदी भाषी देश है, जिसकी मातृभाषा हिंदी है ऐसे देश में हर दिन हिंदी दिवस होना चाहिए। जिस प्रकार सरकार द्वारा हिंदी के विकास पर बल दिया जा रहा है निश्चित रूप से हिंदी आत्मनिर्भर भारत की मजबूत नींव बनेगी और भारत देश को विश्व गुरु का खिताब दिलाएगी। निश्चित रूप से आत्मनिर्भर भारत के दौर में प्रधान मंत्री द्वारा दिया गया नारा "वोकल फॉर लोकल" सार्थक प्रतीत हो रहा है जिसका उपयोग करके, व्यक्ति अपने व्यवसाय को लोकल से ग्लोबल बना कर आत्मनिर्भर भारत को सशक्त बनाते हुए अपनी निज भाषा में बहुत ही सहजता से उत्पादों का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है, जिससे आत्मनिर्भर भारत में हिंदी का योगदान साफ-साफ दिखाई दे रहा है, इसे नकारा नहीं जा सकता।

स्त्रोत- (प्रधानमंत्री उद्बोधन- मन की बात),
आत्मनिर्भर भारत संबंधी मीडिया रिपोर्ट: दैनिक समाचार

तनावमुक्त रहने के लिए काम और निजी जीवन के मध्य संतुलन की आवश्यकता

राजीव पाठक
सेवानिवृत्त
उप महाप्रबंधक

काम की चुनौतियों और निजी जिम्मेदारियों के बीच आज के युवा तनावपूर्ण स्थिति में जीने को विवश हैं। इसलिए काम और निजी जीवन के बीच एक स्वस्थ संतुलन बनाए रखना ज़रूरी है। खास तौर पर बैंकिंग जैसे स्पर्धात्मक व्यवसाय में, निश्चित समय सीमा में कार्य पूरा करने और लक्ष्य प्राप्त करने का दबाव अधिक हो सकता है। काम की चुनौतियों और जीवन की आपाधापी के बीच कई बार हम यह भी भूल जाते हैं कि हमारा एक परिवार भी है।

जीवनयापन के लिए काम करना जरुरी है, भले ही यह एक नौकरी हो अथवा स्वयं का व्यवसाय। दोनों ही स्थिति में अपने क्षेत्र में आगे बढ़ने और तरक्की प्राप्त करने की अपनी चुनौतियां हैं।

ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि हमारे कार्य और निजी जीवन के बीच में एक संतुलन बनाया जाये ताकि हमारा व्यक्तिगत जीवन काम की भेंट न चढ़ जाये। जिन परिवारों में पति और पत्नी दोनों ही काम करते हैं, वहां यह संतुलन और सामंजस्य और भी अधिक जरूरी हो जाता है।

साथ ही पारिवारिक कठिनाइयों के कारण हमारे कार्य की उपेक्षा न हो, इसका ध्यान रखना भी बहुत जरूरी है। इस आलेख में हम 10 ऐसे बिंदुओं की चर्चा करेंगे, जिन्हें अपनाकर हम अपने काम और निजी जीवन के मध्य संतुलन बनाये रखकर मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बना सकते हैं।

1. लक्ष्य निर्धारण में वास्तविक स्थिति की अनदेखी न करें:

जीवन के किसी भी क्षेत्र में लक्ष्य निर्धारण का अपना महत्त्व है। लक्ष्य निर्धारित करते समय मौके पर मौजूद वास्तविक परिस्थितियों को ध्यान में रखना भी जरूरी है। पिछले वर्ष की उपलब्धियों के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान और आगामी वर्षों की संभावनाओं का सही आकलन किया जाना चाहिए। दूसरों की देखादेखी अथवा अति महत्वाकांक्षा में यदि लक्ष्य, यथार्थ से परे हैं, तो निश्चित रूप से इन्हें प्राप्त करना और उस स्तर पर बनाए रखना अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य है, जो अंततः तनाव का एक कारण बन सकता है।

2. प्राथमिकताएं निर्धारित करें:

- सबसे ज़रूरी कामों को पहले निपटाएँ, ताकि आपका समय प्रभावी ढंग से व्यतीत हो। साथ ही परिस्थिति अनुसार प्राथमिकताओं में संशोधन करने का विकल्प भी खुला रखें.
- न कहना सीखें: यदि कोई कार्य नियमानुसार हो ही नहीं सकता, तो पहली मुलाकात में ही सामने वाले व्यक्ति को न कहने की हिम्मत जुटाएं। इससे आपका और दूसरे व्यक्ति, दोनों का ही समय बचेगा। यहाँ यह ध्यान रखें कि 'न' कहना कहीं आदत नहीं बन जाए।

3. समय-प्रबंधन सीखें:

किस कार्य में कितना समय लग सकता है, इसके आधार पर अपने कार्य-घंटों का आबंटन करें। लगातार कार्य करने से भी उत्पादकता कम होती है, इसलिए बीच-बीच में हलके-फुल्के व्यायाम अथवा चहलकदमी के लिए भी कुछ समय निर्धारित करें।

एक समय पर एक ही काम पर ध्यान केंद्रित करें। कार्यकुशलता बनाए रखने के लिए एक साथ कई काम करने से बचें। मल्टीटास्किंग से कोई भी कार्य सही तरह से नहीं हो पायेगा।

सुचारु रूप से कार्य करने लिए कार्य स्थल का व्यवस्थित और साफ़-सुथरा होना जरूरी है। आपकी आवश्यकता की सभी चीजें आपकी पहुँच में होनी चाहिए।

4. स्वस्थ जीवन-शैली अपनाएं:

- अच्छी नींद लें: अपने शरीर और दिमाग को तरोताज़ा करने के लिए 7-8 घंटे की आरामदेह नींद का लक्ष्य रखें।

- ❖ संतुलित भोजन करें: अपने आहार में फल, सब्ज़ियाँ और साबुत अनाज जैसे पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थ शामिल करें।
- ❖ शारीरिक रूप से सक्रिय रहें: मूड और समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए नियमित रूप से व्यायाम करें।

5. सार्थक संबंधों को बढ़ावा दें:

- ❖ प्रियजनों के साथ समय व्यतीत करें: परिवार और दोस्तों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय आपको तनावमुक्त और स्थिर रहने में मदद कर सकता है। अवकाश के दिनों में मिलने-जुलने का कार्यक्रम बनायें.
- ❖ सहायता लेना सीखें : अपने भरोसेमंद सहकर्मियों, सलाहकारों या मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों के साथ अपनी चुनौतियों को साझा करें। सभी लोगों को सभी काम नहीं आते। यदि आप कोई कार्य पहली बार कर रहे हैं, तो उसे सही ढंग से आरम्भ करने से लेकर पूर्ण करने तक की सम्पूर्ण प्रक्रिया को सीखें और इसमें अनुभवी लोगों की सलाह और मार्गदर्शन लेने में संकोच न करें।
- ❖ सामाजिक गतिविधियों में शामिल हों: ऐसे शौक और रुचियों का पता लगाएँ जो आपको समान विचारधारा वाले लोगों से जोड़ते हैं।

6. काम बाँटना सीखें:

- ❖ अपनी टीम को सशक्त बनाएँ। आपके सहयोगी भी कोई कार्य जिम्मेदारी के साथ कर सकते हैं, यह बात जितनी जल्दी सीखें, तो बेहतर है। उनपर भरोसा करिये, काम अपने आप हो जायेगा।
- ❖ छोटी-छोटी बातों का प्रबंधन करने में अपना समय ख़राब न करें, अपितु, अपने अधीनस्थों को इन बातों का ध्यान रखने के लिए उत्साहित करें।

7. स्वयं की देखभाल की जिम्मेदारी भी आप ही की है:

- ❖ समय निकालकर आराम करें और स्वयं को रिचार्ज करें: पढ़ने, संगीत सुनने या प्रकृति में सैर करने जैसी गतिविधियों का आनंद लें।
- ❖ नियमित रूप से अनप्लग करें: मोबाइल और अन्य डिजिटल साधनों से कुछ समय दूर रहकर तनाव कम करें और नींद में सुधार करें।
- ❖ ज़रूरत पड़ने पर मदद लें: अगर आप किसी मानसिक समस्या से जूझ रहे हैं, तो मानसिक स्वास्थ्य पेशेवर से सलाह लेने में संकोच न करें ।

8. काम और घर के बीच अन्तर को समझें:

काम को घर लाने की स्वयं की इच्छा का विरोध करें, जिससे खुद को आराम करने का समय मिले। इसी तरह जब आप काम पर हैं, तो घर की चिंता छोड़ कर अपने कार्य में एकाग्रता बनायें, इससे आप कार्यस्थल पर होने वाली संभावित दुर्घटनाओं से बचाव कर सकेंगे।

9. स्वयं के विकास में निवेश करें:

अपनी शैक्षिक और प्रोफेशनल योग्यताओं में वृद्धि करें। आपके कार्य से संबंधित वर्कशॉप अथवा पाठ्यक्रमों में शामिल हों।

चुनौतियों को स्वीकार करें। बाधाओं से घबराएं नहीं। बल्कि उनसे सीखने, अपनी सामर्थ्य विकसित करने के अवसर के रूप में देखें।

10. सफलता का उत्सव मनाएँ:

अपनी उपलब्धियों को पहचानें। स्वयं को प्रेरित करने के लिए, उपलब्धियां, चाहे कितनी भी छोटी हों, उन्हें मील का पत्थर मानकर एक उत्सव की तरह मनाएँ।

सकारात्मक सोच अपनाएँ: असफलताओं के कारणों को पहचान कर समाधान पर ध्यान दें।

काम और निजी जीवन के बीच संतुलन बनाये रखना एक सतत यात्रा है जिसके लिए प्रयास, धैर्य और आत्म-जागरूकता की आवश्यकता होती है। इन उपायों को अपनाकर, हम तनाव को कम कर सकते हैं, उत्पादकता बढ़ा सकते हैं और अधिक संतुष्ट जीवन का आनंद ले सकते हैं। आगे बढ़ने के हर कदम का उत्सव मनाना और अपने मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना, याद रखें - यह सच्ची सफलता की नींव है ।

प्रबंधक जी की दिनचर्या, 'बोहनी से डे-एंड तक'

नीतू सिंह
मुख्य प्रबंधक
संकाय
एमडीआई बेलापुर

प्रबंधक जी ने सुबह उठते ही भगवान को याद किया, आखिर! करे भी क्यों नहीं, जब से शाखा प्रबंधक बने हैं तब से उन्हें इस बात का प्रमाण मिल गया है कि दुनिया भगवान भरोसे ही चल रही है, बिलकुल उनकी शाखा की तरह। खैर, हरि नाम जपकर जैसे ही साहब की नज़र दीवार के बीच में अधलटकी घड़ी पर गई, तो सीधे चोथे गियर में गाड़ी की रफ्तार से नित्यकर्म निपटाकर ऑटोमेटेड मोड में फॉर्मल ड्रेस पहने शाखा के गेट पर खड़े थे। शाखा के सामने पहुँचते ही फिर से हाथ जोड़कर आसमान की ओर आंखे उठाई और कहा कि प्रभु! आज बोहनी किसी अच्छे ग्राहक से ही करवाना ताकि दिन अच्छा गुजरे। कुर्सी पर बैठते ही दफ्तरी चाय लेकर आया और बोला कि साहब एडमिन प्रभारी शर्मा जी कह रहे थे कि कल देरी से घर पहुँचने के कारण बीवी ने बचा हुआ बासी खाना ही परोस दिया, अब सुबह से पेट में गैस का दर्द है, इसलिए आज देरी से आऊँगा। प्रबंधक जी ने आंखे दिखाते हुए दफ्तरी से व्यंग्यात्मक लहज़े में कहा कि शर्मा जी से कहना कि पंचर करके गैस निकालने वाली किट मंगा कर रखें और वाउचर मुझसे पास करवा लें। दफ्तरी हीं हीं करते हुए चला गया।

दिन की ऐसी शुरुआत करने वाले प्रबंधक जी की दिनचर्या विविधताओं से भरी होती है। एक तरफ शाखा का स्टाफ है जिन्हें सुविधाओं और अधिकारों वाले सर्कुलर तुरंत समझ में आ जाते हैं लेकिन कर्तव्यों/ दायित्वों वाले सर्कुलर की भाषा कठिन लगती है। रही बात ग्राहक की, तो शाखा में घुसते ही जो इंसान सबसे ज्यादा व्यस्त दिखाई देता है, वो है शाखा प्रबंधक। वह फोन पर ज़ेडएम साहब और सामने बैठे ग्राहक को एक साथ, एक जैसा उत्तर देते हुए मिलेगा - जी! सर, जी! सर ... अभी करवा देता हूँ सर! अन्यथा प्रबंधक या तो स्टाफ को समझा रहा होता है, या ग्राहक की शिकायतें सुन रहा होता है, या फिर प्रबंधन को टार्गेट पूरे न होने अथवा होने पर स्पष्टीकरण का आदान-प्रदान कर रहा होता है। इन सभी गतिविधियों के बाद शाम को उसे काम की फिक्र घेर लेती है।

जब से किसी महापुरुष ने कहा है कि ग्राहक भगवान का रूप होता है तब से ग्राहक ने भी प्रबंधक रूपी मानव से देवताओं की तरह व्यवहार करना शुरू कर दिया है। जब बैंक अधिकारी को ग्राहक की जरूरत होगी जैसे कि कहीं हस्ताक्षर छूट गए या विज़िट आदि करना हुआ तो वे ढूंढने से भी नहीं मिलेंगे, अन्यथा बिना काम के आकर घंटे भर देश /समाज की दशा पर लेक्चर देते रहेंगे। उनकी अपेक्षाएं देवलोक के निवासियों की तरह अनरियलिस्टिक और स्वभाव अप्रत्याशित हो चुका है। तुरंत समाधान नहीं मिले, तो लोकपाल में शिकायत डालने का श्राप देने को तत्पर रहते हैं। दूसरी ओर अगर बैंक प्रबंधन के टारगेट पूरे नहीं हुए, तो उसका असर स्टाफ की परफॉर्मेंस रिपोर्ट पर पड़ता है। ऐसे में शाखा प्रबंधक की स्थिति ठीक वैसी ही हो जाती है जैसे बारिश में भीगती एक मोमबत्ती-जलने की भी कोशिश और बुझने का भी डर!

जो लोग बैंक की नौकरी के बारे में नहीं जानते उन्हें शाखा प्रबंधक का काम बड़ा मजेदार लगता है। बैठे बैठे हस्ताक्षर करना और आदेश देना। लेकिन बैंक वालो को पता है कि शाखा प्रबंधक का काम सिर्फ कुर्सी पर बैठकर हस्ताक्षर करना नहीं होता। उसके कंधों पर बड़ी जिम्मेदारियाँ होती हैं जैसे-

- ग्राहकों की समस्याओं का समाधान करना।
- बैंकिंग सेवाओं को सुचारू रूप से संचालित करना।
- बैंक के लक्ष्यों को पूरा करना-नए खाते खुलवाना, ऋण वितरण बढ़ाना, जमाराशियाँ बढ़ाना, निवेश योजनाएँ बेचना आदि।
- कर्मचारियों का मार्गदर्शन करना और उन्हें प्रेरित रखना।
- बैंक की नीतियों का पालन सुनिश्चित करना।

जबकि समय के साथ ग्राहक और उच्च प्रबंधन के शाखा के प्रति नजरिए में बदलाव आया है। बैंक में आते ही ग्राहक उम्मीद करता हैं कि उनकी फाइल सबसे पहले देखी जाए, ऋण तुरंत स्वीकृत हो जाए, कैश जमा और निकासी तुरंत हो जाए, इंटरनेट बैंकिंग और अन्य सुविधाओं में कोई दिक्कत न हो, जैसे कि रामलाल जी अपनी बेटी की शादी के लिए ऋण लेने आए। उन्हें उम्मीद थी कि तुरंत पैसे मिल जाएंगे। लेकिन दस्तावेज़ों की जांच, क्रेडिट स्कोर, बैंक की नीतियाँ - ये सब देखकर जब शाखा प्रबंधक ने कहा कि इसे स्वीकृत होने में कुछ दिन लगेंगे, तो रामलाल जी नाराज़ हो गए। उन्हें लगा कि प्रबंधक जानबूझकर देरी कर रहा है, जबकि शाखा प्रबंधक नियमों का पालन कर रहा था। वास्तविकता यह है कि बैंकिंग प्रक्रियाओं में कई स्तरों पर काम होते हैं तथा समय के साथ नियामकीय नियम एवं दिशानिर्देशों

में बहुत बढ़ोतरी हुई है। रोज़ कोई न कोई नया सर्कुलर या गाइडलाइन आ जाती है। इसलिए बदलती ग्राहक अपेक्षाओं के अनूरूप सेवाएँ उपलब्ध करवाना अपने आप में एक चैलेंज है।

बैंक का प्रधान कार्यालय या फिर आंचलिक कार्यालय साप्ताहिक/ मासिक/ त्रैमासिक / वार्षिक टारगेट देता है। जिसमें खाते खोलना, ऋण देना, बीमा पॉलिसियाँ या थर्ड पार्टी उत्पाद बेचना, डिजिटल बैंकिंग/उत्पादों की पहुँच बढ़ाना सभी स्तरों पर लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं। लक्ष्य पूरे न होने पर उच्च प्रबंधन द्वारा इसकी समीक्षा की जाती है, जिससे शाखा प्रबंधक पर मानसिक दबाव बना रहता है और लंबे समय तक तनाव में रहने से दैनिक जीवन की गुणवत्ता पर भी असर पड़ता है। प्रबंधक की स्थिति वैसी हो जाती है जैसे किसी खिलाड़ी को हर मैच में शतक लगाने के लिए कहा जाए! इसलिए लक्ष्यों का निर्धारण निरंतर न रखकर अंतिम तिमाही या फिर वर्ष के दौरान बीच-बीच में अवसरों को समझते हुए कैम्पेन के रूप में लक्ष्य/ चैलेंज रखने चाहिए। इससे प्रबंधक और उसकी टीम के चैलेंज को पूरा करने की ऊर्जा और उत्साह बने रहते हैं।

उदाहरण के लिए एक शाखा प्रबंधक को प्रधान कार्यालय से आदेश आया कि अगले 10 दिनों में 100 नए फिक्स्ड डिपॉजिट अकाउंट खुलवाने हैं। लेकिन उसी दौरान त्योहारों/ शादियों के कारण ग्राहक अपनी जमा राशि निकाल रहे थे, नए निवेश करने को तैयार नहीं थे। अब प्रबंधक करे तो क्या करे? क्योंकि वह दुविधा में पड़ जाता है? ग्राहक भी नाखुश और बैंक प्रबंधन भी! (ऐसे में शाखा प्रबंधक को संतुलन बनाना था - एक ओर ग्राहकों की जरूरतें और दूसरी ओर प्रबंधन की अपेक्षाएँ। उसने समझदारी से काम लेते हुए ग्राहकों को दीर्घकालिक लाभ समझाए और वैकल्पिक योजनाएँ प्रस्तुत कीं, ताकि सभी पक्षों की संतुष्टि बनी रहे।)

शाखा प्रबंधक की स्थिति एक साथ दो नावों में सवार होने जैसी होती है। ग्राहक चाहते हैं कि उनके काम तुरंत हों, लेकिन बैंकिंग नियमों में समय लगता है। प्रबंधन चाहता है कि लक्ष्य पूरे हों, लेकिन बाजार की स्थिति हमेशा अनुकूल नहीं होती। कर्मचारियों का मनोबल बनाए रखना भी एक चुनौती होती है। लेकिन काम अगर चौनौतीपूर्ण न हो तो फिर लीडेरशिप का विकास होगा कैसे? इसलिए तो सफल शाखा प्रबंधकों को प्रबंधन के उच्चम स्तरों पर पहुंचने का अवसर मिलता है। शाखा में इन सभी चुनौतीपूर्ण कार्यों के प्रबंधन हेतु कुछ समाधान निम्नलिखित हो सकते हैं:

1. **ग्राहकों को जागरूक करना**
   - शाखा में सूचनात्मक पोस्टर लगाना ताकि ग्राहक बैंकिंग प्रक्रियाओं को समझ सकें।
   - समय-समय पर वर्कशॉप आयोजित करना ताकि लोग ऋण, निवेश और बैंकिंग सुविधाओं के बारे में जागरूक हो सकें।

2. **प्रबंधन से बेहतर संवाद**
   - फील्ड पर होने वाली वास्तविक स्थितियों को उच्च अधिकारियों को अवगत करवाना ताकि उच्च स्तर पर बेहतर योजनाएँ बनाई जा सकें।
   - प्रबंधन को अपनी शाखा / क्षेत्र विशेष की परिस्थितियों के अनुसार अपने लक्ष्यों को लचीला करने के लिए सहमत करना आदि।

3. **तकनीकी सुधारों को अपनाना**
   - अधिकतम बैंकिंग सेवाएँ ऑनलाइन उपलब्ध कराना ताकि शाखाओं में फुटफाल कम हो सके।
   - स्वचालित प्रक्रियाओं का उपयोग करना जिससे कार्य तेज़ी से हो सके।

4. **कर्मचारियों को सशक्त बनाना**
   - स्टाफ को उचित प्रशिक्षण हेतु प्रोत्साहित करना ताकि वे ग्राहकों एवं प्रबंधन की अपेक्षाओं के अनूरूप कार्यनिष्पादन कर सकें।
   - एक सकारात्मक कार्य-संस्कृति विकसित करना ताकि सभी कर्मचारी मिलकर टीम के रूप में काम करें।

शाखा प्रबंधक बैंकिंग तंत्र की रीढ़ की हड्डी है, लेकिन उसकी स्थिति चौनौतीपूर्ण होती है। ग्राहकों की उम्मीदें और प्रबंधन के टारगेट के बीच संतुलन बनाना आसान नहीं होता। अगर बैंकिंग व्यवस्था को अधिक व्यवहारिक और सहयोगपूर्ण बनाया जाए, तो शाखा प्रबंधक का दिनचर्या का स्तर सुधर सकता है। शाखा प्रबंधक को सिर्फ एक प्रबंधक नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक और समस्या समाधानकर्ता के रूप में देखा जाना चाहिए। तभी बैंकिंग सेवाएँ अधिक प्रभावी बन सकती हैं और ग्राहक भी संतुष्ट रह सकते हैं। शाखा में कामकाज पर कुछ पंक्तियाँ:

ग्राहक आया जोश में, बोला फ़ौरन काम कराओ,
ऋण हो, निकासी हो, सब चुटकी में निपटाओ,
ज़ेडएम साहब ने बतलाया, टारगेट पूरे कर दिखलाओ,
खाते खोलो, बीमा बेचो, नए निवेश भी लेकर आओ,
शाखा प्रबंधक बेचारा, चुपचाप देखे हाल,
दोनों तरफ़ से दबाव सहता, फिर भी रखे सबका ख़्याल,
कर्मचारी बोले, सर जी, अब क्या करें हालात का?
सिस्टम स्लो है, स्टाफ़ कम है, बढ़ रही... सो बात का,
संभल-संभल के चलता जाए, हर दिन नई मुसीबत आए,
ग्राहक हंसे तो बॉस है धमकाए, बेचारा किसको क्या समझाए,
तो दोस्तों, जब भी बैंक जाओ, रखना थोड़ा ध्यान,
शाखा प्रबंधक भी है इंसान, ना समझो उसे भगवान।

हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं की बैंकिंग में उपयोगिता

दिव्यांश मिश्रा
राजभाषा विभाग
प्रधान कार्यालय

भारत विविधताओं से भरा हुआ देश है, जहाँ अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। "कोस कोस पर बदले पानी और चार कोस पर वाणी" अर्थात् हमारे देश भारत में हर एक कोस की दूरी पर पानी का स्वाद बदल जाता है और चार कोस पर भाषा यानि वाणी भी बदल जाती है। भाषाई विविधताओं से भरे इस देश में सभी के लिए एक भाषा का चयन कर उस पर सहमति बना पाना चुनौतीपूर्ण कार्य है। संविधान सभा ने लम्बी चर्चा के उपरांत 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। सरकार ने हिंदी को राजभाषा के रूप में अपनाने के साथ-साथ देश के विभिन्न हिस्सों में प्रचलित क्षेत्रीय भाषाओं को भी सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में प्रयोग हेतु अनुमति प्रदान की। बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग ग्राहकों को बेहतर सेवाएँ प्रदान करने, वित्तीय समावेशन बढ़ाने और पारदर्शिता सुनिश्चित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आइए, हम इसकी उपयोगिता को और विस्तार से समझें।

1. **नागरिकों तक बैंकिंग सेवाओं की पहुँच:**

- **हिंदी का महत्व:** हिंदी देश की राजभाषा होने के कारण इसे भारतीय जनसंख्या के बड़े हिस्से द्वारा समझा और बोला जाता है। खासकर उत्तर भारत, मध्य भारत, और पश्चिमी भारत के क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग आम बात है। बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी का उपयोग ग्राहकों को बैंकिंग सेवाएँ समझाने में मदद करता है, क्योंकि यह हमारे देश के अधिकांश क्षेत्रों के ग्राहकों की प्राथमिक भाषा होती है।
- **क्षेत्रीय भाषाओं का महत्व:** भारत के विभिन्न हिस्सों में क्षेत्रीय भाषाओं का महत्व है। उदाहरण के लिए, दक्षिण भारत में तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, और बंगाल में बांग्ला जैसी भाषाएँ बोली जाती हैं। इन भाषाओं का उपयोग करके बैंकिंग सेवाओं को स्थानीय स्तर पर अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है, जिससे ग्राहक बिना किसी भाषा अवरोध के बैंकिंग प्रक्रियाओं को समझ सकते हैं।

2. **वित्तीय साक्षरता में वृद्धि:**

- **हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में जानकारी देना:** हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग वित्तीय योजनाओं, बचत योजनाओं, ऋण उत्पादों, बीमा योजनाओं आदि के बारे में जानकारी देने में मदद करता है। इससे ग्राहकों को इन योजनाओं को समझने में आसानी होती है और वे अधिक प्रभावी रूप से इनका लाभ उठा सकते हैं।
- **स्थानीय स्तर पर जागरूकता बढ़ाना:** जब बैंक अपने ग्राहकों को क्षेत्रीय भाषाओं में बैंकिंग संबंधित जानकारी प्रदान करते हैं, तो वे उन क्षेत्रों में अधिक जागरूकता फैलाने में सक्षम होते हैं जहाँ लोग अपनी स्थानीय भाषाओं को प्राथमिकता देते हैं।

3. **बैंकिंग दस्तावेजों और लेन-देन की सुलभता:**

- **हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में दस्तावेज:** बैंकिंग क्षेत्र में खाता खोलने के फार्म, लेन-देन की शर्तें, ऋण आवेदन पत्र और अन्य संबंधित दस्तावेजों को हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध कराकर ग्राहकों को आसानी से समझने का अवसर मिलता है। इससे ग्राहकों को लेन-देन की प्रक्रिया स्पष्ट रूप से समझ में आती है और वे बिना किसी कठिनाई के इन सेवाओं का उपयोग कर सकते हैं।

- **ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स:** बैंक अब अपनी वेबसाइट, मोबाइल ऐप और अन्य डिजिटल प्लेटफार्मों पर हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में सेवाएँ प्रदान करते हैं जिससे ग्राहक इन सेवाओं का उपयोग घर बैठे आराम से कर सकते हैं।

4. **बैंकिंग सेवाओं के डिजिटलीकरण में योगदान:**

- **डिजिटल बैंकिंग में भाषा का योगदान:** भारत में डिजिटल बैंकिंग तेजी से बढ़ रही है, और इसमें हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग ग्राहकों के लिए ऑनलाइन बैंकिंग को सरल और सुलभ बनाता है। ग्राहक अपने पसंद की भाषा का चयन करके इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, और एटीएम सेवा जैसी सुविधाओं का उपयोग सरलतापूर्वक कर सकते हैं, जिनसे वे भौतिक रूप से बिना किसी शाखा में गए कुछ आवश्यक सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं।
- **फिनटेक और मोबाइल ऐप्स:** बैंकों और फिनटेक कंपनियों द्वारा विकसित किए गए मोबाइल ऐप्स में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग किया जाता है, जिससे तकनीकी रूप से कम साक्षर ग्राहक भी आसानी से इन सेवाओं का लाभ ले सकते हैं।

5. **सरकारी योजनाओं का प्रचार:**

- **सरकारी योजनाओं का लाभ:** बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग सरकारी योजनाओं जैसे जन-धन योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, आदि को जनता तक पहुँचाने में मदद करता है। इन योजनाओं की जानकारी जब स्थानीय भाषाओं में होती है, तो इसका प्रभाव अधिक होता है और लोग आसानी से इन योजनाओं का लाभ उठा सकते हैं।
- **प्रचार-प्रसार:** बैंक अपनी शाखाओं में ग्राहकों को सरकारी योजनाओं और अन्य सेवाओं के बारे में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में जानकारी देते हैं, जिससे अधिक से अधिक लोग इन योजनाओं का लाभ उठाते हैं।

6. **बैंक कर्मचारियों और ग्राहकों के बीच बेहतर संवाद:**

- **भाषाई बाधाओं को कम करना:** हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग बैंक कर्मचारियों और ग्राहकों के बीच संवाद को सरल और स्पष्ट बनाता है। इससे ग्राहक अपनी समस्याओं और प्रश्नों को बिना किसी संकोच के व्यक्त कर सकते हैं और कर्मचारियों के लिए उनका समाधान करना आसान होता है।
- **ग्राहक संतुष्टि:** जब ग्राहक को अपनी प्राथमिक भाषा में बैंकिंग सेवाएँ मिलती हैं, तो उनकी संतुष्टि बढ़ती है और वे बैंकिंग सेवाओं को अधिक प्रभावी तरीके से उपयोग करते हैं। स्थानीय लोगों से संवाद के लिए स्थानीय भाषा का प्रयोग कुशल संवाद स्थापित करता है। हम वस्तुओं और सेवाओं की गुणवत्ता को उन्हीं के अंदाज में उनसे साझा करते हैं। इससे हमारे विचारों की अभिव्यक्ति उनके सामने यथास्वरूप होती है। संवाद की यह कला ग्राहक के मस्तिष्क में एक अमिट प्रभाव डालती है। भाषायी जुड़ाव के कारण ग्राहक हमारे उत्पादों अथवा सेवाओं का उपयोग तो करते ही हैं, साथ ही यदि उन्हें किसी अन्य वित्तीय मामलों में सुझाव या सलाह की जरूरत होती है तो भी वे हमसे संपर्क करते हैं। ऐसी परिस्थिति में जहां विश्वास का एक बंधन बन जाता है, ग्राहकों को हम उनकी आवश्यकतानुसार तृतीय पक्ष उत्पाद अथवा सेवाएँ उपलब्ध करा सकते हैं।

7. **भाषा के व्यावसायिक प्रसार से बैंकिंग कारोबार वृद्धि**

आज दुनिया भर के कारोबारी हिंदी सीखने को उत्सुक हैं। भारत विश्व में सबसे बड़ा उपभोक्ता और उत्पादक देश है। अपने कारोबारी स्वार्थ और लाभ के लिए ही सही लेकिन दुनिया के लोग हिंदी को महत्त्व देने लगे हैं। जिस प्रकार से पिछले दो दशकों में चीन के साथ कारोबार वाले व्यापारियों ने चीनी भाषा सीखने और व्यवहार में लाने के प्रयास किए हैं उसी प्रकार से आज दुनिया भर के लोग हिंदी सीखने और उसे व्यावहार में लाने के लिए उत्सुक हैं। आज कारोबार में हिंदी का प्रयोग लगातार बढ़ रहा है, व्यापार में ही नहीं अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी हिंदी का प्रयोग दुनिया की प्रमुख भाषाओं में से एक के रूप में किया जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी के प्रयोग का बीजारोपण बहुत पहले ही हो चुका है। विज्ञापन जगत की बात करें तो भारत में हिंदी का प्रभुत्व स्थापित हो चुका है।

देश-दुनिया के सभी उत्पादों की प्रचार सामग्री हम हिंदी में पा सकते हैं। इससे उत्पादों को बड़ा बाज़ार मिलने के साथ-साथ भारतीय भाषाओं का विकास भी हो रहा है। भाषा संबंधी व्यवसायों जैसे कि अनुवाद, प्रचार सामग्री का उत्पादन, डबिंग आदि से बैंकों को कारोबार भी मिल रहा है तथा भाषाओं के कारण भारत में बढ़ते कारोबार के वित्तपोषण से भी बैंक लाभ कमा रहे हैं।

8. **भाषा और सांस्कृतिक संवेदनशीलता:**

- **संवेदनशीलता को बढ़ावा देना:** क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग बैंकों को ग्राहकों के प्रति सांस्कृतिक और भाषाई संवेदनशीलता को बढ़ावा देने में मदद करता है। यह ग्राहकों के साथ एक गहरे संबंध को स्थापित करता है और उनकी वित्तीय जरूरतों को बेहतर तरीके से समझने में मदद करता है।
- **स्थानीय संस्कृति को समझना:** बैंक स्थानीय भाषाओं का उपयोग करके विभिन्न सांस्कृतिक विविधताओं को समझ सकते हैं और स्थानीय ग्राहकों को उनके व्यवहार, प्राथमिकताओं और जरूरतों के अनुसार बेहतर सेवाएँ प्रदान कर सकते हैं।

निष्कर्ष:

बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग ग्राहकों के लिए बैंकिंग सेवाओं को अधिक सुलभ, समझने योग्य और सहज बनाता है। हिन्दी अथवा क्षेत्रीय भाषा कुशल संवाद के साथ विचारों की स्पष्ट अभिव्यक्ति का साधन बनकर ग्राहक को अपनत्व का एहसास कराती है। ग्राहक भावनात्मक रूप से ब्रांड के साथ जुड़ता है, उसके मन में बैंक के प्रति विश्वसनीयता बढ़ती है। यह वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने, वित्तीय साक्षरता को सुधारने और ग्राहकों के साथ अच्छे संबंध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग न केवल ग्राहकों की संतुष्टि बढ़ाता है, बल्कि इससे बैंक उन्हें बेहतर सेवा देने की दिशा में एक कदम और आगे बढ़ाता है। हिंदी या क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग सांस्कृतिक संवेदनशीलता को भी बढ़ावा देता है, अत: इसके उपयोग से ग्राहकों के साथ बेहतर संवाद स्थापित करने में मदद मिलती है, और समग्र रूप से बैंकिंग प्रणाली में सुधार होता है।

ज़िंदगी का सफर

ज़िंदगी है, कभी धूप, कभी छांव होती है,
हर अंधेरी रात के बाद नई सुबह रोशनी लाती है,
हर ठोकर में छुपा है सीखने का पाठ,
हर ठहरे हुये पल में छुपी है जीवन की बात,
राह कठिन है, पर कदम बढ़ते रहने चाहिए ,
हर मुश्किल को पार करने के सपने सजते रहने चाहिए,
गिरना तो जीवन का हिस्सा है,
हर बार गिरने के बाद संभलना ही किस्सा है,
कभी सोचा है, काली रात क्यों इतनी गहरी होती है?
क्योंकि उसके बाद सुबह की पहली किरण सुनहरी होती है,
दुख का हर पल, सुख का संदेश लाता है,
हर आँसू, खुशी की झलक दिखाता है,
जब अकलेपन का अंधेरा घेरने लगे ,
अपने भीतर छिपे उजाले को याद करो,
जब हौसले की कमी महसूस हो,
अपनी पहली जीत को याद करो,
मुस्कुराहट वो जादू है, जो हर दर्द मिटा सकती है,
और उम्मीद वह रोशनी है, जो हर राह दिखा सकती है,
रास्ते चाहे कितने भी अनजाने क्यों न हो,
हर मोड़ पर एक नया सबक सिखा सकती हैं।

संगीता साव
राजभाषा अधिकारी
गया अंचल

लघु कथा

ज़िंदगी की कला

अमित कुमार
अधिकारी
बैंक ऑफ इंडिया
गोवा आंचलिक कार्यालय

एक बार की बात है, एक छोटा सा बीज था। वो ज़मीन में गड़ा हुआ था। उसे लगा कि वो बहुत अकेला है और उसे कुछ नहीं करना है। उसने आसपास के पेड़ों को देखा जो हरे-भरे थे, पक्षी उन पर घोसले बना रहे थे और बच्चे उनके नीचे खेल रहे थे। बीज ने सोचा, "काश मैं भी इतना बड़ा और मजबूत होता।"

उसने ज़मीन से पूछा, "मुझे इतना बड़ा कैसे बनना है?" ज़मीन ने कहा, "तुझे धैर्य रखना होगा। तुझे पानी पीना होगा, सूरज की रोशनी लेनी होगी और हवा का सहारा लेना होगा। तभी तू बड़ा पेड़ बन पाएगा।"

बीज ने ज़मीन की बात मान ली। उसने धैर्य से इंतज़ार किया। धीरे-धीरे उसने जड़ें फैलाईं, फिर तना निकला और फिर पत्ते आए। वो एक छोटा सा पौधा बन गया।

कई साल बीत गए। वो पौधा एक बड़ा पेड़ बन गया। उसकी शाखाओं पर पक्षी घोसले बनाते थे, बच्चे उसकी छाया में खेलते थे और लोग उसकी ठंडी छाया में बैठकर आराम करते थे।

उस पेड़ ने महसूस किया कि वो ज़िंदगी का असली मज़ा ले रहा है। उसने सीखा था कि ज़िंदगी में धैर्य रखना बहुत ज़रूरी है। उसने सीखा था कि छोटी-छोटी चीज़ों में खुशी ढूंढनी चाहिए। उसने सीखा था कि दूसरों की मदद करना कितना अच्छा लगता है।

कहानी का संदेश:

ज़िंदगी की कला यही है कि हम छोटी-छोटी चीज़ों में खुशी ढूंढें, धैर्य रखें और दूसरों की मदद करें। जब हम ये सब करेंगे तो हम ज़िंदगी का असली मज़ा ले पाएंगे।

संगोष्ठी

कोलकाता अंचल द्वारा दिनांक 7 दिसंबर 2024 को अखिल भारतीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

विभिन्न नराकास से बैंक ऑफ इंडि

ठाणे शाखा, नवी मुंबई अंचल (प्रथम पुरस्कार)

गुवाहाटी अंचल (प्रथम पुरस्कार)

गोवा अंचल (प्रथम पुरस्कार)

सोलापुर अंचल (प्रथम पुरस्कार)

धनबाद अंचल (प्रथम पुरस्कार)

वास्को-डी-गामा शाखा - गोवा (द्वितीय पुरस्कार)

नासिक अंचल (द्वितीय पुरस्कार)

एर्णाकुलम अंचल (द्वितीय पुरस्कार)

या के कार्यालयों को प्राप्त पुरस्कार

कोलकाता अंचल (द्वितीय पुरस्कार)

प्रबंधन विकास संस्थान, बेलापुर (तृतीय पुरस्कार)

अहमदाबाद अंचल (तृतीय पुरस्कार)

जमशेदपुर अंचल (तृतीय पुरस्कार)

ब्रह्मपुर शाखा, संबलपुर अंचल (तृतीय पुरस्कार)

नई दिल्ली अंचल (प्रोत्साहन पुरस्कार)

वाराणसी अंचल (प्रोत्साहन पुरस्कार)

वडोदरा अंचल (प्रोत्साहन पुरस्कार)

कहानी

स्वास्थ्य ही धन है

रवींद्र
वरिष्ठ प्रबंधक
बैंक ऑफ इंडिया
पणजी गोवा

लखनऊ का एक नवाब जो बहुत दयालु और उदार था। उसके अच्छाई, उदारता, दयालुपन के चर्चे अन्य प्रदेशों में भी थे। अपने प्रदेश वासियों के प्रति उसके अच्छे स्वभाव और परोपकार ने उसे एक महान लखनऊ के नवाब के रूप में स्थापित किया था। लेकिन उसके परिवार के लोग और मंत्रीगण उससे कभी खुश नहीं थे क्योंकि वह हमेशा खात-पीता और सोता रहता था। मेहनत का कोई काम नहीं करता था। वह दिन, रात अपने आरामदायक बिस्तर पर खाता या सोता रहता था। आखिरकार, वह तरबूज की तरह गोल मटोल दिखने लगा। इससे उसके सभी दरबारी और प्रदेशवासी चिंतित हो गए।

एक दिन नवाब को लगा कि वह अपने शरीर को महसूस नहीं कर सकता। हालत इतनी गंभीर हो गई कि वह अपने हाथ और पैर भी नहीं हिला सकता था। वह आलू की तरह मोटा हो गया और अदरक की तरह इधर उधर से बढ़ने लगा। इस वजह से उसकी तबियत धीरे धीरे गिरने लगी। प्रदेशवासी पहले से ज़्यादा परेशान हो गए और उसका मज़ाक उड़ाने लगे। वे उसे मोटा नवाब कहने लगे।

अब नवाब को एहसास होने लगा कि अगर वह जल्दी स्वस्थ नहीं हुआ तो वह ज़्यादा दिन तक जीवित नहीं रह पाएगा। इसलिए उसने कई हकीमों को बुलाया और उन्हें आकर्षक पुरस्कार और धन देने का वादा किया। लेकिन वह बदले में सिर्फ़ एक चीज़ चाहता था, पहले जैसा स्वस्थ हो जाना। लेकिन दुर्भाग्य से कोई भी नवाब को स्वस्थ होने में मदद नहीं कर सका। इसलिए, उसका सारा धन और पुरस्कार व्यर्थ हो गया। नवाब बहुत दुखी हो गया और उसकी उम्मीदें भी अब खत्म होने लगी ।

एक सुबह, एक भिक्षु लखनऊ घूमने आये। जब वह दौरा कर रहा थे, तो उसने लखनऊ के नवाब की खराब सेहत के बारे में सुना। फिर उसने तुरंत महल में नवाब के मंत्री को सूचित किया और उनसे कहा, “मैं लखनऊ के नवाब को उसके स्वास्थ्य को वापस पाने में मदद कर सकता हूँ।”

लखनऊ के नवाब के मंत्री भिक्षु की आवाज़ में आत्मविश्वास बहुत ठहराव सुनकर बहुत खुश हुए। उन्होंने लखनऊ के नवाब को भिक्षु से मिलने का अनुरोध किया और कहा कि अगर वह उनसे मिलने का फैसला करते है तो वे इस समस्या से छुटकारा मिल जायेगा। लेकिन भिक्षु महल से बहुत दूर एक जगह पर विश्राम करता था। लेकिन नवाब वहाँ नहीं जा सकता था क्योंकि वह अपना शरीर से लाचार था। इसलिए उसने मंत्रियों से कहा कि वे भिक्षु से महल में आने और उससे मिलने का अनुरोध करें। जब मंत्रियों ने भिक्षु से अनुरोध के बारे में बताया, तो उसने लखनऊ के नवाब के अनुरोध को मानने से इनकार कर दिया और कहा, “मैं नवाब का इलाज तभी करूँगा जब वह मेरे पास आएगा।”

यह सुनने के बाद, नवाब ने भिक्षु के पास जाने का फैसला किया क्योंकि उसके पास वहाँ जाकर इलाज करवाने के अलावा कोई और विकल्प नहीं था। बहुत प्रयास करने के बाद नवाब भिक्षु से मिलने उसके घर गया। भिक्षु ने लखनऊ के नवाब को देखा और उससे कहा, “आप एक अच्छे नवाब हैं और मैं आपको स्वस्थ होने में मदद करूँगा।” भिक्षु ने नवाब से कहा कि वह इलाज कराने के लिए कृपया अगले दिन आने का कष्ट करें। यह भी कहा की वह इलाज तभी करेगा जब नवाब पैदल आएगा ।

शुरुआत में नवाब बिना किसी की मदद के एक सेकंड के लिए भी नहीं चल पाते थे। लेकिन वे अपने अनुयायियों की मदद से उस

भिक्षु के घर गए। परन्तु भिक्षु वहाँ नहीं थे इसलिए, उनके भक्त ने नवाब से कहा कि वे इलाज के लिए अगले दिन उनसे मिलने आएं।

अगले दिन लखनऊ के नवाब फिर से उस भिक्षु के घर गया। लेकिन वह फिर वहाँ नहीं थे। यह घटना बार बार होती रही। नवाब प्रतिदिन आते रहे परंतु भिक्षु से कभी उनकी मुलाकात नहीं हुई। भिक्षु ने कभी उनकी बिमारी का कोई इलाज नहीं किया। समय के साथ नवाब को शरीर का हल्कापन महसूस होने लगा और उसका वजन भी कम होने लगा। उसके बाद, वह पहले से ज़्यादा सक्रिय भी महसूस करने लगा। अब लखनऊ के नवाब को एहसास हुआ कि भिक्षु ने उसे इलाज के लिए पैदल आने के लिए क्यों कहा था। लखनऊ के नवाब बहुत जल्द स्वस्थ हो गया और उसके मंत्री और प्रदेशवासी भी खुश थे।

लखनऊ के नवाब की कहानी हमें सिखाती है कि "हमें जीवन में हर समस्या पर रोने के बजाय हमेशा समाधान खोजने की कोशिश करनी चाहिए।" जिस तरह कहानी में भिक्षु ने लखनऊ के नवाब को उसके अधिक वजन से उबरने में मदद की, उसी तरह हमें भी शिकायत करना बंद कर देना चाहिए और गलतियों से सीखने की कोशिश करनी चाहिए, ताकि हम जीवन में पहले से बेहतर काम कर सकें।

'स्वास्थ्य ही धन है' कहानी को पढ़कर, आप अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत हो सकते हैं और महसूस कर सकते हैं कि स्वस्थ खाने की आदतें विकसित करना आवश्यक है। इतना ही नहीं, बल्कि वे यह भी समझ सकते हैं कि खुद को मानसिक और शारीरिक रूप से फिट रखने के लिए शरीर की फिटनेस बनाए रखना भी आवश्यक है।

सबसे ऊंचा दिख जाना

बड़ा बनना, बड़ा बनके
सबसे ऊंचा दिख जाना
ये कैसी फितरत है इनकी
सभी से ऊंचा हो जाना
ऊँचा ताड देखा है
हिमालय भी सबसे ऊंचा
ये ऊंचा जो होना उनको
तो, नीचे काहे आए हैं
वो जाते ताड़ पर रहते
हिमालय से सबको तकते
वही ये करते हैं फिर भी
फिजूली भ्रम में पलते हैं
अच्छी सूरत वाले से
अच्छी वेतन वाले से
ये अपना वास्ता रखते
उन्ही से, खास जो इनके
इनके खास वो ही हैं
घमंडी जो इनके जैसे
विरासत इन घमंडों की
बड़ी रोचक हो जाती है
जब सब बात वो करते
जो इनसे नीचे वाले हैं
धरा पर रहना भी यारो
बडा नायाब अनुभव है
सभी को ख़ास जो कर दे
वही आयाम उत्तम है।

विजय कुमार
राजभाषा अधिकारी
बैंक ऑफ इंडिया
गोवा आंचलिक कार्यालय

भारत की प्रगति में बाधक - धार्मिक उन्माद

सचिन भास्कर
वरिष्ठ प्रबंधक
विपणन विभाग
आगरा आंचलिक कार्यालय

जिस 'फूट डालो और राज करो' की नीति पर चलते हुए, अंग्रेजों ने भारत को दो सदियों तक गुलामी की जंजीरों में जकड़ कर रखा, वही आपसी फूट आज भी भारत के उज्जवल भविष्य की राह का रोड़ा बनी हुई है। अलग-अलग धर्मों के लोग सदियों से भारत में मिलजुल कर रह रहे हैं। सन् 1857 की क्रांति में हिन्दू और मुगल शासकों के एकजुट विद्रोह ने जब अंग्रेजों की नींद उड़ाई, तब अंग्रेजों ने भारत में अपने शासन को स्थिर रखने के लिए, अनेक स्तरों पर हिन्दू-मुस्लिम समुदायों के बीच धार्मिक उन्माद की खाई को गहरा करने पर ज़ोर दिया। उन्होंने क्षेत्रों के अनुसार समुदाय विशेष आधारित नीतियाँ बनाई, धार्मिक संगठनों को बढ़ावा दिया। हिन्दू, मुगल और सिख शासकों को एक दूसरे के खिलाफ भड़काकर युद्ध करवाए और अंतत: भारत के दो टुकड़े करके चले गए।

इंसान जलता रहे, पर धर्म बचा रहे,
ऐसे जुनून में भला, कोई इंसान कैसे जिंदा रहे,
ना मंदिर का, ना मस्जिद का बस डर का माहौल रहे,
पतन की ओर बढ़े, धार्मिक उन्माद में सब बेहाल रहें।

धार्मिक उन्माद न केवल समाज के लिए चिंता का विषय है, बल्कि यह हमारे देश की एकता और अखंडता के लिए भी खतरा पैदा कर रहा है। धार्मिक उन्माद का अर्थ है-धार्मिकभेदभाव और कट्टरता, जो समाज में तनाव और हिंसा को जन्म देती है। यह उन्माद न केवल व्यक्तिगत स्तर पर, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर भी समस्याएँ उत्पन्न करता है। जब लोग धर्म के नाम पर आपस में लड़ने लगते हैं, तो समाज की बुनियादी एकता और शांति भंग होती है। निवेश का माहौल खराब होता है, आर्थिक स्थिरता टूट जाती है और विकास का पथ अवरोधित होता है। हमारा देश विविधताओं से भरा हुआ है। यहाँ विभिन्न धर्मों, पंथों और संस्कृतियों के लोग मिलकर एक सशक्त और विविधतापूर्ण समाज का निर्माण करते हैं। यही हमारी ताकत है। लेकिन जब हम धार्मिक भेदभाव और उन्माद का शिकार होते हैं, तो यही सामाजिक विभिन्नता हमारे लिए अभिशाप बन जाती हैं।

रास्ते एक थे पर लोग बट गए,
धर्म के नाम पर शहर जल गए,
आंखों में जो सपने थे वो राख हो गए,
धार्मिक उन्माद में अच्छे-अच्छे ख़ाक हो गए।

धार्मिक उन्माद का फैलना केवल किसी एक वर्ग, समूह या समुदाय की समस्या नहीं है; यह पूरे देश की समस्या है। इसके प्रभाव से निर्दोष लोग प्रभावित होते हैं, आम नागरिकों का जनजीवन त्रस्त हो जाता है, सामाजिक समरसता बिगड़ती है और राष्ट्र की प्रगति में रुकावट आती है। इस उन्माद का सामना करने के लिए हमें सबसे पहले अपने दृष्टिकोण को बदलना होगा। हमें यह समझना होगा कि सभी धर्मों और मान्यताओं का सम्मान करना, हमारे लोकतांत्रिक समाज की आधारशिला है। हमारे शिक्षकों, समाजसेवियों और नेताओं की जिम्मेदारी है कि वे नैतिक शिक्षा और सहनशीलता को बढ़ावा दें। हमें यह सिखाना होगा कि धर्म का अर्थ नफरत फैलाना नहीं है, बल्कि एक दूसरे की मदद करना और एक सशक्त समाज और मजबूत देश के निर्माण की दिशा में काम करना है।

खून के रंग से लिख दी गई है जो कहानी ,
क्या यही थी मजहब की असली निशानी?
इंसानियत के सीने में जो कटुता के घाव हैं,
धार्मिक उन्माद में शांति, समृद्धि का अभाव है..

हमारे संविधान ने हमें न केवल धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार दिया है, बल्कि हमें एक ऐसा समाज बनाने का निर्देश भी दिया है जहाँ हर व्यक्ति को सम्मान मिले। फिर भी, हमने देखते हैं कि अंग्रेज़ो का फैलाया हुआ धार्मिक उन्माद और कट्टरता समाज के कुछ हिस्सों में गहराई रची बसी हुई है, और खत्म होने का नाम नहीं ले रही है। इस उन्माद के परिणामस्वरूप, कई बार हिंसा, संघर्ष और अराजकता पैदा होती है। धार्मिक उन्माद के कई कारण हो सकते हैं - सामाजिक असमानता, आर्थिक विषमताएँ, राजनीतिक लाभ, या फिर व्यक्तिगत विफलताएँ। लेकिन इसका सबसे बड़ा कारण है, नागरिकों में समझ और सहनशीलता की कमी। जब लोग एवं समुदाय धर्म को इंसानियत की भलाई की बजाए, अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए प्रयोग करने की कोशिश करते हैं या अपनी मान्यताओं एवं विश्वासों को दूसरों की मान्यताओं के साथ प्रतिस्पर्धी रूप में देखने लगते हैं, तो समाज में तनाव और संघर्ष उत्पन्न होता है। यही संघर्ष आगे चलकर उन्माद एवं हिंसक रूप ले लेता है। ऐसी स्थिति को सुधारने के लिए हमें अनेक कदम उठाने की आवश्यकता है:

- हमें नैतिक शिक्षा के साथ-साथ सभी धर्मों के प्रति सम्मान की भावना को बढ़ावा देना होगा।
- हमें संवाद और सहिष्णुता की संस्कृति विकसित करनी होगी।
- सामाजिक एकता को बढ़ावा देना होगा
- आपराधिक गतिविधियों का विरोध करना होगा, किसी भी प्रकार की धार्मिक हिंसा या उन्माद को बढ़ावा देने वाले तत्वों के खिलाफ कठोर कार्रवाई करनी होगी।
- समाज में पारदर्शिता और जागरूकता बढ़ानी होगी। मीडिया और सामाजिक संगठनों को धार्मिक उन्माद को रोकने के लिए सकारात्मक भूमिका अदा करनी होगी।

सभी नागरिकों की जिम्मेदारी है कि हम इस देश को समृद्ध एवं विकसित बनाने के लिए धार्मिक उन्माद से मुक्त करवाने में अपना योगदान दें। हमें हर हाल में सहिष्णुता, एकता, शांति और समृद्धि की दिशा में काम करना होगा।

अपने अंदर झांको

जग में जो कुछ भी होता है, पहले से ही तय होता है,
फिर भी सब कुछ पाना चाहे, 'मानव' ऐसा ही होता है,
जब आए हम, साथ न था कुछ, जाना भी है खाली हाथ,
पता नहीं फिर पूरा जीवन, क्यूँ करते छल सबके साथ?
जाने के बाद भी याद करेंगे, यदि किया कोई अच्छा काम,
लेकिन अब तक नहीं मिला है, इस आशय का सही प्रमाण,
भूल जाते हैं माता-पिता को, जिसने हमको जन्म दिया,
भूल जाते हम गुरुजन को भी, जिन्होंने हमको संबल किया,
सबको सीढ़ी बना के मानव, बढ़ता रहता है दिन रात,
जिसे नहीं परवाह किसी की, उसे कोई क्यों करेगा याद?
पाने को दुनिया के सब सुख, पकड़े छल प्रपंच की राह
लेकिन जो सुख है, अपने अंदर, उसकी नहीं हमको परवाह।
कुछ दिन छोड़ो, दुनिया की चिंता, मत सोचो कौन कहेगा क्या,
अपने अंदर झाँक कर देखो, देखो तुमको दिखाता है क्या
सब कुछ अपने अंदर ही है, हमें समझ जब आएगा,
मृग तृष्णा मिट जाएगी, सब-सुख हमको मिल जाएगा।

अविनाश कुमार
मुख्य प्रबंधक
एस. जी. हाईवे शाखा
अहमदाबाद अंचल

हिंदी में बतियाती कृत्रिम मेधाः संवाद का भविष्य

मणिराज कुमार
राजभाषा अधिकारी
सिवान आंचलिक कार्यालय

स्मार्टफोन का आविष्कार होने पर कहा गया था कि यह छोटा सा डिवाइस इंसान की सभी जरूरतों का समाधान देने वाला कृत्रिम यंत्र साबित होगा और हुआ भी यही। जैसे-जैसे इसने कैमरा, कैल्कुलेटर, कैलेंडर और अलार्म को हमारे जीवन से हटाया, वैसे-वैसे कहा जाने लगा कि भविष्य में यह कहीं परिवार और रिश्तों का भी विकल्प न बन जाए। उसी दिशा में अग्रसर होते हुए अब हमारी हालत ऐसी है कि आजकल हमें किसी संवाद या अन्य जरूरत के लिए ऑनलाइन जाना नहीं पड़ता बल्कि हम अब हमेंशा ऑनलाइन ही रहते हैं। कभी हम जानकारी पाने के लिए सर्च इंजिन का उपयोग करते थे, अब हालत ऐसी है कि जानकारी हमारे पीछे ही पड़ गई है। कृत्रिम मेधा की शक्ति से अब हमारा फोन हमारी बातें सुनता है, हमारी आदतों को समझने लगा है और हमें उसके अनूरूप जानकारी स्वत: परोसता रहता है। जो इंसान जीवन में किसी महत्वपूर्ण निर्णय या चुनौती से निपटने के लिए अनुभवी लोगों, परिजनों और बुजुर्गों से सलाह-मशविरा किया करता था, अब चैट-जीपीटी (एआई अर्थात् कृत्रिम मेधा) से बतियाने लगा है। कृत्रिम मेधा ने भाषाओं के उपयोग को भी नई दिशा दी है, यह नए साहित्य का सृजन कर रही है।

"तकनीक के दीप तले, संवाद के नए द्वार खुले,
भाषा संग जब एआई मिले,
संस्कृतियों का बढ़े मान और भाषाओं को सम्मान मिले।"

कृत्रिम मेधा (एआई) आधारित चैटबॉट्स, जैसे चैटजीपीटी आदि संवाद के क्षेत्र में क्रांति ला रहे हैं। यह केवल संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि ज्ञान, शिक्षा, व्यवसाय और समाज के हर क्षेत्र में बदलाव का साधन बन चुका है। विशेष रूप से हिंदी भाषा में कृत्रिम मेधा (एआई) के उपयोग ने संवाद को नए आयाम दिए हैं। भारत जैसे बहुभाषी देश में, जहां हिंदी बोलने और समझने वालों की संख्या सबसे अधिक है, एआई ने न केवल संवाद की प्रक्रिया को सरल बनाया है, बल्कि इसे प्रभावी और सुलभ भी बनाया है। हिंदी और एआई का यह संगम भाषा, संस्कृति और तकनीक के समन्वय का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करता है।

चैटजीपीटी जैसे एआई उन्नत भाषा मॉडल है, जो जनरेटिव प्री-ट्रेंड ट्रांसफॉर्मर (जीपीटी) तकनीक पर आधारित है। इनका उद्देश्य मानव जैसे संवाद को संभव बनाना है। यह मॉडल बड़ी मात्रा में डाटा पर प्रशिक्षित है, जिसमें किताबें, लेख और इंटरनेट सामग्री शामिल है। इसकी विशेषता यह है कि यह केवल एक संवाद का साधन नहीं है, बल्कि यह ज्ञान को संरचित और सरल भाषा में प्रस्तुत करने की क्षमता रखता है। ऐसे एआई मॉडल का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं है, बल्कि यह जटिल समस्याओं को समझकर समाधान भी प्रदान कर सकता है। विशेष रूप से, हिंदी भाषा में एआई के उपयोग ने संवाद की प्रक्रिया को और भी सरल और प्रभावी बना दिया है। यह न केवल छात्रों और शिक्षकों के लिए एक उपयोगी उपकरण है, बल्कि यह व्यवसायिक और सामाजिक क्षेत्रों में भी अत्यधिक सहायक सिद्ध हो रहा है।

"शब्दों की माला, भावों का सार, हिंदी के संग एआई है गतिमान,
संवाद सरल, सुलभ हो ज्ञान, हिंदी के संग
चमके तकनीक का मान।"

हिंदी भाषा में एआई का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में संवाद को सरल और सुलभ बना रहा है। इसके कुछ प्रमुख पहलू निम्नलिखित हैं:

1. शिक्षा का सशक्तिकरण

एआई चैटबॉट शिक्षकों और छात्रों के लिए एक उपयोगी उपकरण बन गया है। यह छात्रों को उनकी भाषा में जटिल विषयों को समझाने में मदद करता है। उदाहरण के लिए विज्ञान, गणित और इतिहास जैसे विषयों को हिंदी में सरल तरीके से समझाने में

चैटजीपीटी का उपयोग किया जा सकता है।

2. ग्रामीण भारत में प्रभाव

भारत का बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में बसता है, जहां लोग हिंदी या क्षेत्रीय भाषाओं में संवाद करते हैं। ऐसे में, एआई चैटबॉट ने सरकारी योजनाओं, कृषि, स्वास्थ्य और शिक्षा से जुड़ी जानकारी पहुंचाने का कार्य आसान कर दिया है।

3. व्यावसायिक संवाद का विस्तार

व्यवसायिक क्षेत्र में हिंदी में संवाद करने की बढ़ती आवश्यकता को पूरा करने में एआई चैटबॉट सहायक है। यह ईमेल, रिपोर्ट, और ग्राहक सेवा जैसे कार्यों को प्रभावी ढंग से संभाल सकता है।

4. लेखन और संपादन में सहायता

एआई चैटबॉट लेखकों के लिए हिंदी लेखन को सरल बना रहा है। यह लेखन में रचनात्मकता को प्रोत्साहित करता है और लेखन कार्यों, जैसे- ब्लॉग पोस्ट, रिपोर्ट और शोध पत्र, में सुधार करता है।

5. हिंदी भाषा का वैश्वीकरण

एआई चैटबॉट ने हिंदी भाषा को वैश्विक स्तर पर ले जाने में मदद की है। यह हिंदी में संवाद करने की क्षमता रखता है, जिससे यह भारत के बाहर भी उपयोगी बन सकता है।

हिंदी में एआई चैटबॉट के उपयोग के संभावित क्षेत्र

1. शिक्षा और प्रशिक्षण

हिंदी में एआई चैटबॉट का उपयोग शैक्षिक सामग्री तैयार करने, ऑनलाइन कक्षाओं में सहायता प्रदान करने और छात्रों के प्रश्नों का उत्तर देने में किया जा सकता है। यह शिक्षकों को विषय की जटिलता को सरलता से समझाने में मदद करता है।

2. ग्राहक सेवा

ग्राहकों की समस्याओं का समाधान हिंदी में करके यह सेवा को अधिक प्रभावी और सुलभ बनाता है।

3. अनुवाद और भाषा प्रशिक्षण

यह उपकरण हिंदी और अन्य भाषाओं के बीच अनुवाद के लिए अत्यधिक प्रभावी है। यह विदेशी भाषाओं के वक्ताओं को हिंदी सिखाने और समझाने में मदद करता है।

4. सरकारी योजनाओं का प्रसार

सरकारी योजनाओं की जानकारी ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों तक सरल हिंदी में पहुंचाई जा सकती है।

5. सामाजिक संवाद और सामुदायिक विकास

चैटजीपीटी सामाजिक मुद्दों पर संवाद करने और सामुदायिक विकास के लिए जानकारी प्रदान करने में सहायक हो सकता है।

चुनौतियाँ और समाधान

1. भाषाई विविधता का सामना

भारत में हिंदी की अनेक उपभाषाएँ और क्षेत्रीय स्वरूप हैं। एआई चैटबॉट को इन विविधताओं को समझने और उनका उत्तर देने में प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है।

2. सांस्कृतिक संदर्भों की समझ

संवाद करते समय सांस्कृतिक संदर्भों को समझना एक बड़ी चुनौती है। एआई चैटबॉटस् को हिंदी संस्कृति और परंपराओं के संदर्भ में और बेहतर बनाने की आवश्यकता है।

3. तकनीकी विकास

हिंदी व्याकरण और शब्दावली की विविधता को ध्यान में रखते हुए तकनीकी सुधारों की आवश्यकता है।

4. डिजिटल पहुंच की कमी

ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल संसाधनों की सीमित पहुंच एक बड़ी बाधा है। इसके समाधान के लिए सरकार और निजी संगठनों को मिलकर कार्य करना होगा।

"हिंदी के शब्दों में शक्ति अपार, ज्ञान की गंगा का हो विस्तार।
एआई संग जुड़ा यह नाता, हर प्रश्न का उत्तर हो सहज आता।"

भविष्य की संभावनाएँ

1. डिजिटल साक्षरता का विस्तार

हिंदी में एआई के उपयोग से डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा दिया जा सकता है।

2. हिंदी भाषा में एआई आधारित शिक्षा प्रणाली

एआई हिंदी माध्यम के छात्रों के लिए एक डिजिटल शिक्षक के रूप में कार्य कर सकता है।

3. सांस्कृतिक संरक्षण

एआई का उपयोग हिंदी साहित्य, लोककथाओं और संस्कृति को संरक्षित करने और उन्हें वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने में किया जा सकता है।

4. सामाजिक और आर्थिक प्रभाव

यह समाज के वंचित वर्गों तक जानकारी पहुंचाने और उन्हें सशक्त बनाने में मदद कर सकता है।

हिंदी और कृत्रिम मेधा का संगम भाषा, संस्कृति और तकनीक के समन्वय का एक आदर्श उदाहरण है। यह न केवल संवाद को सशक्त बना रहा है, बल्कि हिंदी भाषा को वैश्विक स्तर पर नई पहचान भी दिला रहा है। तकनीक के इस युग में, चैटजीपीटी जैसे एआई उपकरण हिंदी के विकास और प्रसार में मील का पत्थर साबित हो सकते हैं।

हमारा बैंक

शुचिता मिश्रा
प्रबंधक
एफ़जीएमओ, लखनऊ

दीपेष आज बहुत खुश था। इंजीनियर बनने के लिए उसने इंटरमीडिएट में 85 प्रतिशत अंक प्राप्त कर जो प्रवेश परीक्षा भी दी थी, उसमें सफल हो गया था। दीपेश अपने घर की स्थिति जानता था कि उसके पापा, जो कि एक प्राइवेट फर्म में चपरासी है, और रात्रि में ए.टी.एम. में गार्ड की नौकरी भी करते है, ने मेहनत करके उसको यहाँ तक पहुंचाया है। दीपेश भी उनकी मेहनत का मान रखते हुए इंजीनियरिंग की प्रवेश परीक्षा पास कर गया, परन्तु हर चीज खुशी कहाँ देती है। जब वह अपने दोस्तों को यह खुशखबरी देने पहुँचा तो सबने बधाई के बाद पूछा कि अब तुम इतनी मंहगी फीस, हास्टल का खर्च, कॉपी-किताबें का कहाँ से बंदोबस्त करोगे। इन सबका तो एक सेमेस्टर में लगभग एक से दो लाख का खर्चा हो जायेगा। दीपेश के पैरों तले जमीन ही खिसक गई, वह सोच में पड़ गया। उसने सदैव यही सोचा था कि वह कुछ बन जायेगा तो अपने मम्मी-पापा को एक अच्छी जिंदगी देगा।

दीपेश जब घर पहुँचा तो उससे पहले ही उसकी छोटी बहन ने उसके प्रवेश परीक्षा का परिणाम सबको बता दिया था। सब बहुत ही प्रसन्न थे और मोहल्ले में भी सब उसको बधाई दे रहे थे। दीपेश शांन्त मुस्कुराता रहा। उसके पापा को लग रहा था कि दीपेश कुछ तो परेशान है। रात में उन्होंने उससे पूछा तो दीपेश ने कहा - मुझे इंजीनियरिंग नहीं करना है। मैं कहीं काम करके प्राइवेट से अपना स्नातक पूर्ण कर लूंगा। उसके पापा ने कहा- दीपेश तुमसे मुझे बड़ी आशाएं है और तुमने तो प्रवेश परीक्षा भी उत्तीर्ण कर ली है, फिर क्या हुआ। दीपेश ने बताया पापा इस पढ़ाई में एक सेमेस्टर में ही बहुत पैसा लग रहा है। चलो यदि मै नाम लिखवा भी लूंगा और किताबें भी पुस्तकालय से मुझे प्राप्त हो जायेगी और मैं उन्हें माँग कर पढ़ लूगा पर अन्य खर्चे कहां से आएंगे। ये सुनकर उसके पापा भी परेशान हो गये। उन्होने कहा - “तुम चिन्ता न करो मै कुछ सोचता हूँ।”

रात में पापा पास ही में लगे बैंक ऑफ इंडिया के एक ए.टी.एम. में अपनी ड्यूटी करने गए तभी वहाँ बैंक के अधिकारी उसमें पैसा डालने और इन्ट्री करने आए। दीपेश के पापा सदैव उनसे बहुत हंसकर नमस्कार और बातें करते थे, पर आज वह चिन्ता में थे। बैंक के अधिकारी श्री मित्तल उनको जानते थे अत: उन्होंने पूछा - “अरे, कृपा नारायण, आज क्या हुआ। कुछ बोल क्यूं नहीं रहे।” दीपेश के पापा ने उनसे सारी बातें बता दी। वह हंसने लगे बोले - “लो भला, बैंक के ए.टी.एम. पर ड्यूटी करते हो और कुछ ज्ञान नहीं रखते क्या?” दीपेश के पापा कुछ समझ नहीं पाएं। मित्तल जी ने उनको एक कार्ड दिया और बोले कल दीपेश को लेकर वहाँ चले जाना।

अगले दिन मित्तल जी द्वारा बताई बैंक ऑफ इंडिया की शाखा में दीपेश और उसके पापा, श्री कश्यप जी के पास पहुंचे। उन्होने उनको आदर से बिठाया। दीपेश के पापा ने सारी समस्या बताई। कश्यप जी ने उनको शिक्षा ऋण यानि एजूकेशन लोन के विषय में सब बातें आराम से उन्हीं की सरल भाषा हिन्दी में बताई और यह भी समझाया कि कौन-कौन से दस्तावेज जमा किए जायेंगे। दीपेश यह जानकर बेहद प्रसन्न हो गया कि उसको अपनी फीस के साथ-साथ

हास्टल फीस, कापी-किताबों यहाँ तक कि उसको एक लैपटॉप खरीदने हेतु भी ऋण प्राप्त हो जायेगा। जैसे-जैसे सेमेस्टर की फीस जमा होनी होगी बैंक सीधे कॉलेज को ही फीस भर देगा जिसकी रसीद कालेज से लेकर बैंक में जमा की जानी होगी। इस ऋण की अदायगी उसे इंजीनियर बनने के बाद अपनी नौकरी मिलने पर करनी होगी। उसके पापा पर कोई अतिरिक्त बोझ नहीं पड़ेगा।

दीपेश और उसके पापा ने सब समझ कर आवेदन पत्र ले लिया और घर आकर उसे भर दिया। उनको यह देखकर अच्छा लगा कि आवेदन पत्र एक ओर हिन्दी में भी छपा था, जिसको वह आसानी से समझ कर पूरा भरते गए। श्री कश्यप जी द्वारा बताए अभिलेखों को भी उन्होंने कुछ ही दिनों में तैयार कर लिया। कॉलेज से भी सारी औपचारिकताएं पूर्ण करके बैंक को जमा कर दी।

आज दीपेश बहुत प्रसन्न था और मंदिर से प्रसाद लेकर वह कश्यप जी की उस शाखा में पहुँचा जहाँ वह आजकल कार्यरत थे। दीपेश जब अंदर पहुँचा तो उन्होंने उसे पहचाना नहीं और पूछा कि वह उसकी क्या मदद कर सकते है। दीपेश ने मुस्कुराते हुए - "सर मेरी मदद तो आपके बैंक ने कर ही दी है।" कश्यप जी बोले - "मै समझा नहीं।" दीपेश ने उसे चार साल पहले की बातें बताई और कहा कि आज ही उसे एक मल्टीनेशनल कंपनी में नौकरी मिली है और वह मंदिर से होकर आपको प्रसाद देने आया है। कश्यप जी को सब याद आ गया और बहुत ही अपनेपन से उन्होंने कहा - "ओह, दीपेश, भई आज तो तुम सूटबूट में पहचाने नहीं जा रहे हो। बहुत बहुत बधाई हो।"

दीपेश ने कहा "सर आपने हमारी बैंक के विषय में धारणा को सुधार दिया। आपने एक ऐसे इंसान जिसको बैंक के विषय में कोई जानकारी नहीं थी, इस प्रकार से सहायता की कि सारे कार्य बहुत ही आसानी से पूर्ण होते गए। जहाँ समस्या आई आपने बहुत अच्छी तरह समझाया और आपके बैंक के कार्मिकों ने अपने-अपने पटल (काउंटर) पर भी पूरा सहयोग किया। अब तो यह बैंक हमारा हो गया है और आप सब एक परिवार। यदि बैंके इसी तरह अपने ग्राहकों को अपनेपन और धैर्य से योजनाओं से अवगत कराती रही तो जल्द ही देश का हर अंतिम छोर का गॉव भी बैंक से जुड़ कर उसका पूर्ण लाभ उठा सकेगा।

अब दीपेश बँगलौर जैसे शहर में अपने माता-पिता और परिवार के साथ रह रहा है और मौका मिलने पर अपनी कहानी और बैंकों की योजनाओं के विषय में जरूरतमंद लोगों को बताता रहता है क्योंकि अब बैंक, बैंक न होकर "हमारा बैंक" जो बन गया था उसके लिए।

जैसे आज

जैसे आज.....
आज मौसम का मिजाज़
कुछ अलग सा लगा,
जैसे ये खुला आसमां
इन हवाओं,
इन फिज़ाओं को अपनी
बाहों में लिये
आज कुछ कहना चाहता हो।
जैसे बादल आज जमकर
बरसना चाहते हों,
जैसे राहें आज खुद
चलना चाहती हों,

जैसे ये हरे-भरे बाग इन फूलों को लिये
और ये फूल अपनी खुशबू को लिये
आज अपने पंख फैलाना चाहते हों,
जैसे ये पत्ते उन बारिश के झोंकों में
आज जमकर लहराना चाहते हों,
जैसे आज ये बादल
अभी बस बरसने ही वाले हों।

सुप्रिया सोनी
साबरमती शाखा
अहमदाबाद अंचल

मेरी रणथंभौर की यात्रा

फतेह सिंह मीना
प्रबंधक
राजभाषा विभाग
जोधपुर अंचल

राजस्थान का नाम आते ही हमारे दिल और दिमाग में एक अलग प्रकार की अनुभूति का अनुभव किया जा सकता है। राजस्थान अपने अभूतपूर्व, वैभवशाली इतिहास के लिए जाना जाता है। राजस्थान की धरती रणभूमि में राजपुताना पराक्रम का बेमिसाल इतिहास, वीरांगनाओं के जौहर और अद्वितीय रूप-वैभव को प्रस्तुत करते शानदार किले, महल व बावड़ियां आदि राजस्थान का व्याख्यान अपने-आप करती है।

राजस्थान के एक अहम पत्रे से साक्षात्कार करने के लिए हमने सर्वप्रथम हमारे शहर गंगापुर सिटी (राजस्थान) से रणथंभौर जोकि 85 किलोमीटर दूर स्थित है । हमारे परिवार के सदस्यों के साथ जाने के लिए एक योजना बनाई। इस स्थल के लिए परिवार के लोगों को एक अलग ही प्रकार का चाव रहता है। सबसे बड़ी बात यह है कि यहाँ जाने के लिए ज्यादा सोचना नहीं पड़ता। चूंकि वहाँ जाने के लिए सड़क मार्ग एवं रेल मार्ग दोनों ही है।

उक्त स्थल पर जाने के लिए हमने सड़क मार्ग से जाने का निश्चय किया। यह यात्रा दिसम्बर माह में की गई। राजस्थान में इस समय बहुत ही अधिक सर्दी का कहर रहता है। इसलिए हम घर से प्रात: 9:00 बजे के आस-पास निकले। यात्रा के लिए हम 5 लोग थे। यात्रा में लगभग 2 घंटे के आस-पास का समय लगा। जिस दिन हम घूमने गए, रविवार का दिन था। वैसे तो पूरे 12 माह पर्यटकों की अच्छी ख़ासी संख्या रहती है। लेकिन उस दिन पर्यटकों की संख्या बहुत अधिक थी, शायद उसके दो कारण रहे होगें एक मौसम और दूसरा बच्चों का शीतकालीन अवकाश।

अब थोड़ा रणथंभौर किले और उद्यान के बारें में जान लेते है। रणथंभौर राजस्थान के सवाई माधोपुर जिले में स्थित है। यह राष्ट्रीय उद्यान उत्तरी भारत के सबसे बड़े पार्कों में से एक है। यह विंध्य और अरावली पर्वत श्रृंखलाओं की गोद में स्थित, यह पार्क अपनी समृद्ध जैव विविधता, वनस्पतियों और जीवों की दुर्लभ प्रजातियों, चंबल नदी, सेलिब्रिटी बाघों, हरे-भरे घास के मैदानों और अद्भुत दृश्यों के लिए जाना जाता है।

जब हम किसी पर्यटन स्थल पर जाने का मन बनाते है तो हम उस जगह के इतिहास के बारे जानना चाहते है। इसी तरह हमने भी इस स्थल के बारे में जाना तो पता लगा कि यह रणथंभौर किला या रणथंभौर दुर्ग चौहान शाही परिवार से संबध रखता है। रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना वर्ष 1980 में सवाई मान सिंह अभयारण्य और केलादेवी अभयारण्य के साथ की गई थी, जिसका बाद में 1991 में रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान में विलय हो गया। राष्ट्रीय उद्यान कभी जयपुर के राजाओं के लिए सबसे लोकप्रिय शिकार स्थल था और इसका नाम उनके नाम पर रखा गया था। रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान लगभग 392 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैला हुआ है। रणथंभौर किले को वर्ष 2013 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है क्योंकि यह राज्य का एक खास पहाड़ी किला है।

यह शाही किला 12 वीं शताब्दी से अस्तित्व में है। यह आकर्षक किला रणथंभौर नेशनल पार्क के जंगलों के बीच स्थित है, जहां पर नेशनल पार्क से किले का दृश्य और किले से पार्क का दृश्य दोनों ही देखने लायक है। रणथंभौर नेशनल पार्क के घने जंगल कभी राजघराने का शिकारगाह थे। रणथंभौर किला बड़ी- बड़ी दीवारों से घिरा हुआ है, जिसमें पत्थर के मजबूत मार्ग और सीढ़ियाँ हैं जो किले में ऊपर की तरफ लेकर जाती है। इस किले के बड़े गेट, स्तंभ और गुंबदों, महल और मंदिरों के साथ इसकी राजस्थानी वास्तुकला पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करती है। यहां पार्क का रिजर्व क्षेत्र कई तरह के जानवरों और पक्षियों का घर है। किले के पास पर्यटकों को आम तौर पर बहुत सारे बंदर देखने को मिलते हैं।

रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान बाघों की लोकप्रिय नस्ल के लिए भी जाना जाता है जो एशिया के मूल निवासी हैं और रॉयल बंगाल टाइगर्स के रूप में जाने जाते हैं। टी-24 उस्ताद, टी-17 मछली, टी-39 माला, टी-25 डॉलर पार्क के कुछ सबसे लोकप्रिय और सबसे अधिक फोटो खिंचवाने वाले बाघ हैं। वर्ष 1973 में, बाघों के विकास और संरक्षण के लिए पार्क के एक परिभाषित क्षेत्र में प्रोजेक्ट टाइगर शुरू किया गया था और बाद में इस क्षेत्र को राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा दिया गया था।

अब हम अपनी यात्रा पर लौट आते हैं। सवाई माधोपुर से रणथंभौर का रास्ता बहुत ही शानदार है। जैसे ही हम सवाई माधोपुर से रणथंभौर जाते हैं तो हम देखते हैं कि रास्ते में महलनुमा बहुत से होटल मिलते है। सड़क के किनारे बहुत से पेड़-पोधे, कई वृक्ष इतने पुराने कि वह अपनी कहानी ही खुद ब्यां करते है। सड़क के किनारे भेड़-बकरी के झुंड। रणथंभौर दुर्ग, रणथंभौर नेशनल पार्क के बीच एक बड़ी सी चट्टान पर स्थित है। धीरे-धीरे हम प्रकृति का आनंद लेते हुए अंत में किले के मुख्य द्वार पर पहुँच जाते है। हमने गाड़ी पार्क करके किले में प्रवेश के लिए तैयार थे। हम वहाँ देखते है कि बहुत से बंदर बैठे हुए। पर्यटक उन्हे निहारते नजर आ रहे थे। कुछ लोग स्लेफ़ी ले रहे थे। किले के मुख्य द्वार पर एक हैंडपम्प के पानी का आनंद लेते हुए, हम आगे बढ़े और हमने पाया कि किले में एक बहुत विशाल सुरक्षा दीवार है उसे निहारते हुए किले का मुख्यद्वार के पास पहुँच जाते है। यह एक विशालकाय लकड़ी से निर्मित दरवाजा है, उसको देखकर मन प्रफुलित हो जाता है ।

मुख्य द्वार नवलखा पोल से चलते-चलते प्रकृति का आनंद लेते हुए, आगे बढ़ते हुए विभिन्न द्वार जैसे हाथी पोल, गणेश पोल, अंधेरी पोल, दिल्ली पोल, सतपोल और सूरज पोल से होते हुए किले में स्थित गणेश मंदिर पहुँच जाते है। यहां पर अनेक पुजा-प्रसाद सामग्री की दुकानें थी, वहाँ से हमने पुजा सामग्री लेकर हमने त्रिनेत्र गणेश जी के दर्शन किए। यह आने वाले भक्तों और पर्यटकों के बीच काफी प्रसिद्ध है। मान्यताओं की माने तो अगर कोई अपनी इच्छाओं को लेकर भगवान गणेश को पत्र लिखकर भेजता है तो उसकी इच्छाएं जरुर पूरी होती हैं। और साथ ही यहाँ के लोगों द्वारा कोई भी शुभ कार्य के लिए सबसे पहला निमंत्रण इन्हें दिया जाता है। मंदिर के पास एक पद्मला तालाब है वो भी बहुत ही आकर्षक है। माना जाता है कि हम्मीर की बेटी ने पारस पत्थर के साथ पद्मला तालाब मे अपनी ईहलिला समाप्त की! यह भी कहा जाता है कि 1975 मे आपातकाल के समय इस दुर्ग मे भी खजाने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा जी द्वारा सर्च अभियान चलाया गया था तब वहां के लोगो मे यह एक अफवाह काफी प्रसिद्ध रही जो आज भी मौजूदा लोगों के ज़हन में ज़िंदा है कि, इंदिरा जी ने पारस पत्थर के लिए इस दुर्ग और पद्मला तालाब की खुदाई करवाई!

पद्मला तालाब किले के मुख्य जल स्रोत है। पर्यटकों द्वारा यहाँ राजस्थान के प्रमुख व्यंजन चूरमा-बाटी बनाते देखा जाता है। इसके बाद हम किले में स्थित एक कचहरी उसे हम्मीर कचहरी कहते हैं, इस कचहरी में तीन कक्ष है जिसमें केंद्रीय कक्ष सबसे बड़ा है। बरामदे की छत को सपोर्ट देने के लिए संरचना में खम्बें है। इस किले के अंदर हम्मीर सिंह के शासनकाल के दौरान बना एक महल भी स्थित है जिसको हम्मीर पैलेस कहा जाता है। इस महल में कक्ष और बालकनी है जो छोटे पारंपरिक दरवाजों और सीढ़ी से जुड़े हुए हैं। इस तीन मंजिला इमारत में 32 खंभे हैं जो छत्रियों या गुंबदों को सपोर्ट देते हैं। इस किले की संरचना में एक बरामदा है जो भवन के प्रत्येक स्तर तक लेकर जाता है। रणथंभौर का किले में एक 84 स्तंभों वाला एक बड़ा हॉल भी है जिसकी ऊंचाई 61 मीटर है। इस हाल को बदल महल के रूप में जाना जाता है और इसका उपयोग सम्मेलनों और बैठकों के लिए किया जाता था।

हम वहाँ पक्षियों की चहचहाहट को अपने कैमरे में कैद करके आगे बढ़ते और यहाँ के बारे में माना जाता है कि पार्क में लगभग विभिन्न पक्षियों की 300 से अधिक प्रजातियों का घर है। मिनिवेट्स, किंगफिशर, मधुमक्खी खाने वाले, एशियन पाम स्विफ्ट, पिपिट्स, गौरैया, गुल, कठफोड़वा, कबूतर, स्पूनबिल्स, वैगटेल, मैना, शेल डक, पिंटेल आदि इस पार्क के सबसे लोकप्रिय पक्षियों में से हैं।

इस संस्मरण के पढ़ने के बाद यदि आप एक प्रकृति या वन्यजीव प्रेमी हैं तो यह वह जगह है जिसे आपको अवश्य देखना चाहिए। चूंकि रणथंभौर एक प्रसिद्ध टाइगर रिजर्व है जो साल भर पर्यटकों का स्वागत करता है। यदि आप सड़क मार्ग से राष्ट्रीय उद्यान तक पहुँचने की योजना बनाते हैं तो आपको दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और बेंगलुरु से क्रमश: लगभग 400, 1,000, 1,500 और 1800 किमी की दूरी तय करनी होगी। रेल द्वारा सवाई माधोपुर रेलवे जंक्शन राष्ट्रीय उद्यान का निकटतम रेलवे स्टेशन है और हवाई यात्रा के लिए जयपुर अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट है जो कि रणथंभौर से 150 कि.मी है ।

इस तरह रणथंभौर का आनंद लेते हुए लगभग 03:00 बज गए। फिर पेट में चूहे कूदने का एहसास भी हो रहा था। चूंकि देखने के लिए बहुत कुछ था, पर समय नहीं बचा था। हम किले से निकले और सवाई माधोपुर के लिए निकल पड़े। वहाँ एक भोजनालय में खाने का लुफ़्त उठाया और घर के लिए निकल पडे। बीच रास्ते में सड़क पर अमरूद बेचने वाले थे और आपको बता दूँ कि यहाँ के अमरूद विश्व प्रसिद्ध है। हम लगभग 06:00 बजे के आस-पास घर पहुँच गए ।

हमारी यह यात्रा बहुत ही रोमांचित कारी रही। ज़िंदगी में बदलाव बहुत जरूरी होता है जब हम रोज़मर्रा से कुछ हटकर करते है तो अपने लिए और अपने परिवार के लिए वक्त दे पाते है। यही बदलाव ही ज़िंदगी में बहुत आवश्यक है, जिससे जीवन में सकारात्मकता का संचार हो सकें और मेरा मानना है कि पर्यटन स्थलों पर जाने से आनंद तो प्राप्त होता ही है बल्कि हमें ऊबाऊ जीवन से बाहर निकलने का मौका भी हमें प्राप्त होता है ।

मैं नारी हूँ

मैं चंचल धारा नदियों की,
मैं गीत पुराने कालों की,
मैं तेज हूँ अग्नि लपटों की,
मैं सजग समय की साथी हूँ,
मैं कालचक्र की गति स्वयं,
मैं रातों की शीतल चाँदनी भी,
मैं दिन का भोर उजाला हूँ,
हूँ देवी मंदिर की,
मैं कोठों की गणिका भी हूँ,
मैं रानीवासों में रहने वाली,
मैं समरभूमि में मरने वाली,
कैद नहीं मैं होने वाली,
मैं पंछी उन्मुक्त गगन की हूँ ,
मैं स्वयं समय को रचने वाली,
मैं जीवन का आरंभ लिखूँ,
मैं नारी हूं....
खुद उसकी अवतारी हूं,
क्रोध ना मुझको आने पाए,
मैं मौत लिखूँ .....
ये हो ना जाए,
बस इतना तुम कर देना,
मुझको केवल जीने देना,
केंद्र में हैं ये समस्त सृष्टि मेरे
मैं सृष्टि को खुद में धरने वाली।

कान्ति कुमारी
मुख्य प्रबन्धक
बर्धमान आंचलिक कार्यालय

व्यतिक्रम

लेखक- श्री रमाकांत

अदिति शील
वरिष्ठ प्रबन्धक, आयोजना विभाग
देहरादून आंचलिक कार्यालय

'व्यतिक्रम' कथाकार रमाकांत की एक महत्वपूर्ण रचना है। रमाकांत 1960, 70 और 80 के दशक के हिंदी के एक लोकप्रिय लेखक हैं। सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित रमाकांत की एक और महत्वपूर्ण कृति "कार्लो हब्शी का संदूक" का अंग्रेजी अनुवाद - जो भीष्म साहनी ने किया था - दक्षिण अफ्रीका के तत्कालीन राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला को भेंट किया गया था।

'व्यतिक्रम' एक निचले वर्ग के सामान्य परिवार के रोजमर्रा के संघर्षों को चित्रित करती मर्मस्पर्शी कहानी है। 'व्यतिक्रम' का कथानक उसके एक पात्र के माध्यम से आगे बढ़ता है जो एक किशोर बालक है। कहानी में उस किशोर बालक के अभिभावक और उसका एक और भाई है जो अपनी जिंदगी में आती कठिनाइयों से जूझ रहे हैं। घर में पिता का कोई स्थाई काम और रोजगार न होने की वजह से आर्थिक तंगी का माहौल है। आर्थिक स्थितियां इतनी खराब होने लगती हैं कि घर में खाने की तंगी होने लगती है। परिस्थितियां इतनी बिगड़ती हैं कि सर्दी के मौसम में इन बच्चों को गरम कपड़े मिलने भी मुश्किल होने लगते हैं। कथानक में एक असहाय पिता की विडंबना को भी दर्शाया गया है कि कैसे वो अपने बच्चों के लिए गरम कपड़े लेना चाहता है पर पर्याप्त धन न होने की वजह से बस, मन मसोस कर रह जाता है। वो खुश है कि जहां एक तरफ, उसका बेटा बड़ा हो रहा है जिसकी वजह से उसके कपड़े छोटे हो रहे हैं वही वो दुखी भी है कि वो अपने उसी बेटे को सर्दी से बचाने के लिए ऊनी कपड़े तक खरीदने की स्थिति में नही है। पिता किताबें पढ़ने का शौकीन है पर उसे उन किताबों को चंद रुपयों के लिए बेचने पर मजबूर होना पड़ता है। कहानी आगे बढ़ती है जब उन बच्चों की मां को घर पर सिलाई और बुनाई का काम करना पड़ता है पर उनका यह काम भी ज्यादा नहीं चलता। फिर से आर्थिक तंगी आनी शुरू हो जाती है। कुछ दिनों के कठिन समय के बाद पिता को फिर से एक फैक्ट्री में काम मिलता है और घर में कुछ खुशियां आती हैं। बच्चों को भरपेट खाना मिलता है और ऐसा लगता है कि अब इस परिवार की मुश्किलें खत्म हो रही हैं पर फिर कुछ दिनों बाद पिता को दोबारा एक विडंबना से गुजरना पड़ता है जब उसे पता लगता है कि उसका काम उसे तब मिला था जब कुछ मजदूर काम छोड़ कर चले गए थे पर अब वो मजदूर वापस आकर अपना हक मांग रहे हैं। पिता फिर से एक दुविधा में पड़ जाता है और फैक्ट्री में दोबारा ना जाने का निर्णय लेता है। उसे यह एहसास होता है कि उसने अपने जैसे ही किसी गरीब का हक मारा है। फिर से परिवार के सामने एक अनिश्चिता की स्तिथि आ जाती है और कई सवालों को सामने रखते हुए कहानी पूर्ण हो जाती है।

कहानी के शिल्प में भी लेखक ने कई प्रयोग किए हैं। पूरी कहानी की भाषा सधी हुई और प्रवाहदार है। कहानी अभिधा शैली में लिखी गई है। कथा वाचक एक किशोर लड़का है जिसके माध्यम से पूरे पूंजीवादी तंत्र पर एक प्रहार किया गया है जो इंसान को इंसान की तरह न देख कर एक वस्तु की तरह देखता है। कहानी में मुहावरों का प्रयोग भी देखने को मिलता है। पूरी कहानी में बिंबो का ऐसा प्रयोग है कि पाठक की आंखों के सामने जैसे चित्र बनने लगते हैं।

'व्यतिक्रम' पूरे भारतीय समाज के अमानवीय पहलुओं को उघाड़कर पाठक के सामने रखती है। कहानी यह बताती है कि अंधाधुंध और तर्कहीन विकास विनाश की तरफ ले जाता है। विकास ऐसा होना चाहिए जिसके केंद्र में मनुष्य हो न की पूंजी और सत्ता। आज अमीर और गरीब के बीच की खाई बढ़ती जा रही है, अमीर और अमीर हो रहा है जबकि गरीब और गरीब होता जा रहा है। जरूरत है एक ठहराव के साथ ऐसे सामंजस्यपूर्ण उत्थान की जिसमें गरीब का शोषण न हो और उसे भी उसका वो हक मिले जो उसे मिलना चाहिए।

आगरा का ताज महल

हर्षदकुमार पी दमानिया
सेवानिवृत्त अधिकारी

वास्तुशिल्प सौंदर्य का एक उत्कृष्ट स्मारक 'ताज महल' विश्व के सात अजूबों में से एक है। सन् 1991 में, ताजमहल युनेस्को विश्व धरोहर स्थल बना। इसके साथ ही इसे विश्व धरोहर के सर्वत्र प्रशंसा पाने वाली, अत्युत्तम मानवीय कृतियों में से एक बताया गया है। यह प्रेम और सृजनात्मकता का एक शानदार प्रतीक है। इसकी वास्तु शैली फ़ारसी, तुर्क, भारतीय और इस्लामी वास्तुकला के घटकों का अनोखा मिश्रण है। ताज महल मुगल वास्तुकला की उत्कृष्टता का प्रतीक है। यह शानदार सुंदरता और बेजोड़ निर्माणकला के प्रतीक के रूप में मजबूती से खड़ा है। यह हमें प्रेम की पराकाष्ठा दर्शाता है और भावी पीढ़ियों के लिए एक उदाहरण है। शाहजहाँ कुछ ऐसा बनाना चाहते थे जो पहले कभी किसी ने न सोचा हो और न ही किसी के लिए किया गया हो और भविष्य में भी कोई ना कर सके। सम्राट अपनी पत्नी को 'ताजमहल- प्रेम के प्रतीक स्वरूप' एक आखिरी उपहार देना चाहता था। प्रेम किसी को क्या करने के लिए प्रेरित कर सकता है यह उसका जीता जागता उदाहरण है।

ताज महल की सुन्दरता उल्लेखनीय है। सूर्य की सफ़ेद रोशनी हो या फिर चांद की सुनहरी चांदनी, संगमरमर से बना यह स्मारक अद्‌भुत रंग के साथ चमकता है। उदाहरण के लिए सुबह में यह धुंधली लाल चमक के साथ दिखाई देता है, दोपहर में यह मोती जैसा सफेद हो जाता है, शाम को यह हल्का गुलाबी और हल्का नारंगी दिखता है। चांदनी रात में, विशेषकर पूर्णिमा की रात को इसकी खूबसूरती और भी ज्यादा बढ़ जाती है। ताजमहल के सामने पानी के चैनलों में सुंदर फव्वारे भी हैं। पानी में ताज का प्रतिबिंब एक मंत्रमुग्ध कर देने वाला दृश्य बनाता है और यह दुनिया में सबसे ज़्यादा फ़ोटो लिए जाने वाली जगह है। ताजमहल के निर्माण की कहानी जाने बिना ताजमहल सिर्फ़ एक भव्य इमारत ही दिखाई देती है। प्रेम की अमिट बुनियाद पर बने इस शानदार स्मारक को शाहजहाँ और मुमताज़ की प्रेमकथा ने जीवंत बना दिया है।

मुगल बादशाह शाहजहां के लिए मुमताज महल की हैसियत बेगम मात्र से कहीं ज्यादा अधिक थी। मुगल सल्तनत में भी मुमताज को सिर्फ खूबसूरती के लिए ही नहीं, बल्कि बुद्धिमत्ता से शासन करने वाली महिला के तौर पर भी जाना गया। शाहजहां ने मुमताज को कई उपाधियां और ऐसी सुख सुविधाएं दी, जो उनसे पहले किसी मुगल रानी को नहीं मिली थी। मुमताज महल को 'मलिका-ए-जहां' और 'मलिका-ए-हिन्द' की उपाधि दी गई। वो शाहजहां के लिए बेगम होने के साथ-साथ एक विश्वसनीय दोस्त और सलाहकार भी थीं। इतिहासकार लिखते हैं, शक्तिशाली होने के बावजूद भी मुमताज ने कभी सत्ता पाने की चाह नहीं रखी। जब मुमताज की प्रसवोत्तर जटिलताओं के कारण मृत्यु हो गई, तो शाहजहां को बहुत दु:ख हुआ और उसने शाही दरबार को पूरे दो साल शोक में डुबो दिया। मुमताज की मृत्यु ने सम्राट को इतना तोड़ दिया कि कुछ ही महीनों में उनके सारे बाल और दाढ़ी बर्फ की तरह सफ़ेद हो गए।

कहा जाता है कि मुमताज की मौत के बाद उसकी आत्मा ने शाहजहाँ को ताज महल बनवाने की ख्वाहिश याद दिलाई और फिर शाहजहां ताजमहल के निर्माण की योजना बनाना शुरू कर दिया, जो उसकी प्रिय पत्नी के प्रति उसके प्यार का अंतिम प्रमाण था। उसने मुमताज के लिए उत्कृष्ट मकबरे को डिजाइन करने के लिए पूरे देश के कलाकारों और वास्तुकारों को बुलाया। कुल मिलाकर, 20,000 कारीगरों ने 22 वर्षों में 1,000 हाथियों की मदद से ताजमहल और उसके बगीचों के निर्माण का काम पूरा किया। इस तरह शाहजहां ने अपने शासनकाल में मुग़ल साम्राज्य को अपनी महान वास्तुकला से समृद्ध किया। ताजमहल के निर्माण के कुछ वर्षों बाद, शाहजहाँ के पुत्र औरंगज़ेब ने उन्हें बंदी बना लिया। शाहजहाँ ने अपने जीवन के अंतिम वर्षों को आगरा के किले में बिताया, जहाँ से वह ताजमहल को देख सकते थे। कहा जाता है कि शाहजहाँ ने अपनी अंतिम सांस ताजमहल की ओर देखते हुए ली, जहाँ उनकी प्रिय मुमताज महल आराम कर रही थीं। उनकी मृत्यु के बाद, शाहजहाँ को भी ताजमहल में मुमताज महल के बगल में दफनाया गया। जिसे देखने के लिए आज लाखो लोग जाते है इन दोनों की कब्र ताजमहल में है। ताजमहल के निर्माण की कहानी हमें सिखाती है कि सच्चा प्रेम अमर होता है। ताजमहल, जो इस प्रेम कहानी का प्रतीक है, यह दिखाता है कि प्रेम की शक्ति किसी भी हद को पार कर सकती है। है। हर व्यक्ति को अपने जीवनकाल में एक बार ताज महल जरूर देखना चाहिए।

आंवला

हो क्या तुम भी अमीर, जब प्रश्न उछाला गया,
कह दिया "हाँ" मैने भी, फिर मुझसे ना टाला गया,
फिर उठे कुछ हास मंद,
फुसफुसाहटें भी थीं चंद,
फिर किसी ने पूछ डाला,
अपना पूरा तरकश निकाला,
क्या हैं तुम्हारे पास ऊंची अट्टालिकाएं,
या कि हैं अट्टालिकाओं में से कुछ भवनों की तालिकाएं,
क्या तुम करते हो महंगी गाड़ियों की सवारी,
या कि बैंकों में रखते हो धनराशि भारी,
या कि तुम हो मालिक किसी उद्यम के,
या किसी उद्योग में नाम का तुम्हारे सूर्य चमके,
क्या किसी मनोरंजन जगत या खेल के हो तुम सितारे,
या कि कुछ भी नहीं है और फिरते मारे-मारे,
यदि नहीं कुछ भी तो कैसे कह दिया अमीर हो,
दंभ सब झूठा ही है या रखते कुछ ज़मीर हो,
मुस्कुराने की अब थी मेरी बारी,
नजरें मुझ पर टंगी थीं सबकी, नर हो या नारी,
मैंने कहा, मित्र, प्रश्न थे सभी विचित्र,
पर उत्तर मैं देता हूं,
प्रश्नों से भागूं भला क्यों, क्या मैं कोई नेता हूं,
ना ही हैं अट्टालिकाएं, ना ही महंगा वाहन,
ना उद्योगपति, ना कलाकार, ना खिलाड़ी, ना बैंक में बहुत धन,
फिर भी क्यों अमीर तो सुनो ये जवाब है,
घर है छोटा सा, कुआं और साथ में एक बाग है,
काम भर की खेती और छोटा सुखी परिवार है,
गांव में रहकर भी समझता कैसा ये संसार है,
अट्टालिकाएं नहीं पर चिड़ियों की चहचहाहट है,
गुलाब की खुश्बू भरी है, गेंदें, गुड़हल की बसाहट है,
आम हैं, अमरूद हैं, हैं नींबू, बेल, कटहल, पपीता,
सब्जियां, अनाज घर के, इतना कम है क्या सुभीता,
मेरा नहीं कोई व्यापार ऐसा विश्व में जो व्याप्त है,
पर एक धन संतोष का है कि जो प्राप्त है, पर्याप्त है,
और इस धन का नहीं कोई है मुकाबला,
और हाँ, सर्दी है तो अपने बाग का है आंवला।।

सौरभ मणि त्रिपाठी
जौनपुर शाखा
वाराणसी अंचल

भारत का मिनी अफ्रीकी गांव

रूमी देशवाल
राजभाषा अधिकारी
गांधीनगर आंचलिक कार्यालय

गुजरात का जाम्बूर गांव भारत के किसी अन्य गांव की तरह ही है। लेकिन इसे 'भारत का मिनी अफ्रीकी गांव' के रूप में भी जाना जाता है। सदियों से, यह स्थान सिद्दी समुदाय का घर रहा है, जो अफ्रीकी मूल के लोग हैं। माना जाता है कि वे बंटू जनजाति के सीधे वंशज हैं जो पहली बार 7वीं सदी में अरब आक्रमण के हिस्से के रूप में भारत आए थे। कुछ नाविक और व्यापारी थे, जबकि अन्य को भारत में गुलाम के रूप में लाया गया। उन्हें मूल रूप से एबिसिनियन और फारसी के रूप में जाना जाता था। यदि रिकॉर्ड पर विश्वास किया जाए, तो नाम सिद्दी अरबी शब्द सैयद से लिया गया है, जिसका अर्थ है मालिक। सिद्दी समुदाय को हब्शी या बादशाह जैसे विभिन्न पर्यायवाची नामों से भी जाना जाता है। ये लोग अब भारत को अपना घर मानते हैं, अफ्रीकी भाषा की कोई याद नहीं है, स्पष्ट गुजराती भाषा में बात करते हैं।

जब वे भारत में बसे, तो उन्होने सुन्नी इस्लाम, विशेष रूप से सूफीवाद और पीर या संतों की पूजा को अपनाया। लेकिन पूर्वजों की पूजा की अफ्रीकी परंपरा भी सिद्दी आध्यात्मिकता का एक महत्वपूर्ण पहलू बनी हुई है और जिन पीरों की वे पूजा करते हैं, वे उनके हब्शी पूर्वज हैं। जामबूर गांव में विभिन्न पीरों के कई दरगाहें हैं, जिनमें से चार उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं - नगरशी पीर दरगाह, बाबाघोर की दरगाह, दासल बापू की दरगाह और जामलूर गांव, जूनागढ़ जिले में माई-परसा की दरगाह।

सिद्दियों के पास अपनी उत्पत्ति और प्रवास के बारे में लोककथाएँ और लोकगीत हैं। ये लोकगीत 'धमाल नृत्य (पारंपरिक लोक नृत्य)' के समय गाए जाते हैं, जो सौराष्ट्र में अत्यंत लोकप्रिय है। धमाल सूफी और पूर्वी अफ्रीकी संगीत और नृत्य परंपरा का मिश्रण है। धमाल के दौरान गाए जाने वाले आध्यात्मिक गीतों को ज़िक्र कहा जाता है। पुरुष और महिलाएं दोनों रसड़ा नृत्य में भाग लेते हैं, लेकिन धमाल नृत्य केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है।

हालांकि, परंपरा के मामले में, वे आमतौर पर गुजराती परंपराओं का पालन करते हैं और अपनी पूर्वज परंपराओं को ज्यादातर भूल चुके हैं।

सिद्दी समुदाय की हिरबाई इब्राहीम लोबी को 2023 में ग्रामीण गुजरात में सिद्दी महिलाओं और युवाओं को सशक्त बनाने के उनके काम के लिए पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अहमदाबाद के दिल में, सिद्दी सैयद मस्जिद एक सांस्कृतिक स्थल के रूप में खड़ी है, जिसे 16वीं सदी के हब्शी नवाब, शेख सिद्दी सैयद द्वारा बनवाया गया था। नागरिक गर्व से इसकी सुंदर जालीदार खिड़कियों की ओर निहारते हैं, जिनमें एक फलता-फूलता जीवन का वृक्ष है। इस्लामी पौराणिक कथाओं में, यह वृक्ष अमरता और एक शाश्वत विरासत का प्रतीक है, जैसे सिद्दियों की विरासत इस शहर की नींव में निहित है।

मांडू : एक पर्यटन स्थल

विवेक भावे
प्रबंधक
धार अंचल

मांडू, मध्य प्रदेश राज्य के धार जिले में स्थित एक ऐतिहासिक स्थल है, जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक और स्थापत्य धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। यह स्थान प्राचीन काल में महल, किलों, मस्जिदों और महलों का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र रहा है। मांडू का इतिहास बहुत ही रोचक और विविधतापूर्ण है, जिसमें मध्यकालीन भारत की स्थापत्य कला, संस्कृति और युद्धों के महत्वपूर्ण आयाम शामिल हैं।

वर्तमान में पर्यटन स्थल

मांडू, मध्य प्रदेश का एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर स्थल है, जो शानदार किलों, महलों, मस्जिदों, और झीलों के लिए

प्रसिद्ध है। यहाँ के आकर्षक पर्यटक स्थल न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि उनकी वास्तुकला और प्राकृतिक सुंदरता भी पर्यटकों को आकर्षित करती है। मांडू के प्रमुख आकर्षक पर्यटक स्थलों में शामिल हैं:

1. विजय महल

विजय महल मांडू का प्रमुख आकर्षण है, जिसे सुलतान बाज बहादुर ने 16वीं सदी में बनवाया था। यह महल अपने भव्य निर्माण और शानदार वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। इस महल से पूरे मांडू शहर का दृश्य दिखाई देता है और यहाँ से आसपास की सुंदरता का आनंद लिया जा सकता है।

2. रानी रूपमती महल

रानी रूपमती महल मांडू के सबसे प्रसिद्ध और रोमांटिक स्थलों में से एक है। यह महल रूपमती और सुलतान बाज बहादुर की प्रेम कथा से जुड़ा हुआ है। महल के ऊपरी भाग से आपको नर्मदा नदी और आसपास के सुंदर दृश्यों का दृश्य मिलता है। यह महल स्थापत्य कला का अद्भुत उदाहरण है।

3. हिन्डोला महल

हिन्डोला महल को 'स्विंग पैलेस' भी कहा जाता है। इसे सुलतान ग़ियास-उद्दीन खिलजी ने बनवाया था। इस महल के कक्ष झूले की संरचना के कारण इसे हिन्डोला महल (झूला महल) कहा जाता है। यह महल वास्तुकला के लिहाज से बहुत ही अद्वितीय है।

4. जामी मस्जिद

यह मस्जिद मांडू के प्रमुख इस्लामी स्थापत्य धरोहरों में से एक है। इसे सुलतान अहमद शाह ने 1450 में बनवाया था। इस मस्जिद

की वास्तुकला में तामीरी और इस्लामी शैली का अद्भुत मिश्रण देखा जा सकता है। यह मस्जिद मांडू के धार्मिक इतिहास का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

5. बाज़ बहादुर महल

यह महल सुलतान बाज बहादुर का निवास स्थान था। महल के परिसर में शानदार वास्तुकला और पानी के प्याले की संरचनाएँ हैं। यह महल मांडू के ऐतिहासिक स्थानों में एक और महत्वपूर्ण स्थल है। इस महल में आपको बाज बहादुर और रूपमती की प्रेम कथा से जुड़ी संरचनाएँ और चित्र भी देखने को मिल सकते हैं।

6. दिलावर खान की मस्जिद

दिलावर खान की मस्जिद मांडू में एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है, जिसे सुलतान दिलावर खान ने बनवाया था। यह मस्जिद इस्लामी वास्तुकला का एक अद्वितीय उदाहरण है और मांडू के धार्मिक और सांस्कृतिक इतिहास को दर्शाती है।

7. मांडू किला

मांडू किला मांडू शहर का सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है। यह किला मांडू के ऊपर स्थित है और इसके भीतर कई महल, मस्जिदें, जलाशय और अन्य संरचनाएँ हैं। किले की दीवारों से आपको मांडू और इसके आसपास के क्षेत्रों का शानदार दृश्य दिखाई देता है। किले की सुरक्षा प्रणाली और वास्तुकला इसे पर्यटकों के लिए आकर्षक बनाती है।

8. नेहरू जी की झील

यह झील मांडू के पश्चिमी हिस्से में स्थित है। यह झील उस समय के जल आपूर्ति और जल प्रबंधन का बेहतरीन उदाहरण है। इस झील का पानी साफ और ठंडा रहता है, और यह आसपास के क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता को बढ़ाता है।

9. आधिवास महल

यह महल एक ऐतिहासिक और स्थापत्य रूप से आकर्षक स्थल है। यहाँ की संरचनाएँ आपको मांडू के इतिहास के बारे में बहुत कुछ बताती हैं। इस महल की वास्तुकला को देखने के बाद पर्यटकों को इस स्थान का महत्व समझ में आता है।

मांडू को एक प्रमुख पर्यटन स्थल और सांस्कृतिक धरोहर स्थल के रूप में विकसित करने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदमों से इस स्थान की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान को सहेजने, ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण, पर्यटन सुविधाओं के सुधार, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन और स्थानीय रोजगार सृजन जैसे प्रयासों से मांडू एक प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में उभरा है। इसके अलावा, मांडू में आधुनिक तकनीक और डिजिटल संसाधन का इस्तेमाल भी किया जा रहा है, जिससे इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित करने में मदद मिली है। इन प्रयासों से मांडू को न केवल पर्यटन की दृष्टि से लाभ हुआ है, बल्कि यह स्थानीय समुदाय और भारतीय इतिहास के प्रति जागरूकता बढ़ाने में भी सहायक साबित हो रहा है।

चित्र काव्य प्रतियोगिता का चित्र

प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए इस चित्र के भावों को व्यक्त करने वाली कविता अधिकतम 50 शब्दों में लिखें और हमें BOI.Vaarta@bankofindia.co.in पर ईमेल द्वारा भेजें। सर्वश्रेष्ठ कविता के रचियता का फोटो, कविता के साथ अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। पुरस्कार राशि रु. 1000/- है। इस प्रतियोगिता में केवल बैंक ऑफ इंडिया के स्टाफ सदस्य ही भाग ले सकते हैं। कृपया नोट करें कि 50 से अधिक शब्द होने पर प्रविष्टि को पुरस्कार हेतु पात्र नहीं माना जाएगा।

सितंबर 2024 अंक के चित्र काव्य प्रतियोगिता के विजेता

हिमालय की गोद में

हिम शिखरों की चादर ओढ़े, नभ को चूमे पर्वत राज,
नील गगन मिलकर बोले, शान्ति, प्रेम, सदा हो साज।
हरियाली की बाहें फैलीं, स्वागत करती पथिकों का,
शीतल समीर करे अनुराग, मोहित मन के कोनों का।
हे हिमालय, तेरा वैभव, युग-युग तक अमर रहे,
भारत का ताज सदा बना रहे।

लोकेश राय
अधिकारी
आंचलिक संग्रह केंद्र
सूरत अंचल

सराहनीय प्रयास

• उत्तम कुमार पुरुषोत्तम, पटना अंचल • अरूप चक्रवर्ती, बारासात अंचल • उषा, नुगंबक्कम शाखा, चेन्नई अंचल • हरिओम द्विवेदी, कानपुर अंचल • नेहा मिश्रा, कानपुर अंचल • ऋचा डोगरा, चंडीगढ़ अंचल • संतोष कुमार, गया अंचल • मेघा सिंह, उन्नाव शाखा

बैंक ऑफ इंडिया के तत्वावधान में नराकास की छमाही बैठकों का आयोजन

23.10.2024 को नराकास केंदुझर की 25वीं छमाही बैठक

24.10.2024 को नराकास नागपुर की 73वीं छमाही बैठक

13.11.2024 को नराकास उन्नाव की छमाही बैठक

20.12.2024 को नराकास हरदोई की 9वीं छमाही बैठक

27.12.2024 को नराकास सिवान की तृतीय छमाही बैठक

संसदीय राजभाषा समिति का निरीक्षण

27 दिसंबर 2024 को राजभाषा संसदीय समिति द्वारा नई दिल्ली में बैंक के दिल्ली एनसीआर अंचल का निरीक्षण किया गया।

17 जनवरी 2024 को राजभाषा संसदीय समिति द्वारा मुंबई में बैंक के मुंबई उत्तर अंचल का निरीक्षण किया गया।

प्रिया अवस्थी
वरिष्ठ प्रबंधक
लखनऊ अंचल